॥ श्रीमद्वल्लभाचार्यजी-श्री महाप्रभुजी ।

श्रीमदाचार्य चरणं शरणं सर्व देहिनाम् ।
समस्त दोष दहनं मस्तके राजतां मम ॥
प्रा. चंपारण्य. सं. १५३५ चैत्र कृष्ण ११

माला तिलकना रक्षणहार

।। श्रीमद् गो. श्री. गोकुलनाथजी महाराज ।।

प्रा. 'अडैल' सं. १६०८ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ भृगुवार

नित्यलीला प्रवेश, श्रीगोकुल,
सं. १६९७ माघ कृष्ण ९ स्थितिवर्ष ८९-२-१७

नमामि श्रीगुरुदेवं वल्लभं वल्लभात्मजम् ।
यः करोति सदारण्ये मङ्गलं जनमुक्तिने ।।१।।
मायावाद चिद्रूपादि प्रतिबन्ध निवारकः ।
दम्भहा दुर्मदांधानां पायाद्वो [illegible] ।।२।।

वचनामृत १ लुं.

एक समये पुष्टिमार्गीय सिद्धांत श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगुसांइजीसों पूछ्यो. तब श्री गुसांइजी चाचा हरिवंशजी तथा [illegible] आदि अनेक भगवदीयन के अर्थ श्रीगोकुलनाथजी प्रति आप अपने पुष्टिमार्ग को सिद्धांत श्रीमुखसों कहें. सो सुनिके चाचा हरिवंशजी तथा [illegible] आदि अंतरंग भगवदीय अपने मनमें बहोतही प्रसन्न भये. तापाछें श्रीगोकुलनाथजी आप अपनी बेठकमें पधारे; सो श्रीगुसांइजी के वचनामृत को अनुभव सिद्धांत अपने मनमें करत हते, ता समे श्रीगोकुलनाथजीके सेवक कल्याणभट्टजीने आयकें श्रीगोकुलनाथजीसों दंडोत किये, तब श्रीगोकुलनाथजी बोले नहीं. आपुतो पुष्टिमार्गीय सिद्धांनके रसमें मग्न होइके अनुभव करतहें. तब कल्याणभट्टजी हाथ जोरकें ठाडे होय रहे. तापाछे चार घडीमें श्रीगोकुलनाथजी उंची द्रष्टि करीकें कल्याणभट्टकी ओर देखे. तब फेरि कल्याणभट्टने दंडवत् किये. तब श्रीगोकुलनाथजी आप कल्याणभट्टसों आज्ञा कीये जो तुम कबके आये हो,

तव कल्याणभट्टजीने आपसों विनती कीनी जो महाराज मोकों आये तो चार घडी भइ हे. तव श्रीगोकुलनाथजी प्रसन्न होयकें श्रीमुखसों आज्ञा कीये. जो आज श्री गुसांइजी अपने पुष्टिमार्गको सिद्धांत मोसों कहे हे: सो पुष्टिमार्गकी रीति तो महा कठिन हें. सो बनत नाहिं हें. तव कल्याणभट्टने श्रीगोकुलनाथजीसें विनती कीनी जो महाराज कछु हमारे लायक होयसो कृपा करिकें हमसों कहिये. हमको आपके श्रीमुखके वचन सुनिवेको महामनोरथ हे. ओर पुष्टिमार्गकी रीति तो बननी महा कठिन हे, परंतु हमको सुनिवेकोहु अति दुर्लभहे. यह वचन सुनिके, श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टके उपर बहोत प्रसन्न भये, तव श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति आज्ञा किये, जो यह वार्ता ओरके आगे कहिवेकी नहीं हे. तुम भगवदभक्तहो ओर तुमको पुष्टिमार्गकी रीति सुनिवेमें अत्यंत प्रीति हे, तातें में तुमसों कहत हों; सो मन लगायकें सुनियो, तथा हृदयमें धारण करियो.

अव श्रीगोकुलनाथजी भगवदीयके लक्षण तथा पुष्टिमार्गीय सिद्धांत कल्याणभट्ट प्रति कहत हें:—सो

मुल भगवानको भूलि गयो हे, ओर अपने कुटुंबरूपी
डार शाखासों लपटातहे, ओर उनसों मिलिके अनेक
प्रकारके दुःख-सुखको अनुभव करत हे, यह वृक्षरूपी
मनुष्यको मायारूपी अविद्या लागी हे. तातें मोहके वश
होय के डरपत हे, जो मेरे कुटुंब स्त्री पुत्रादिकनको दुःख
होयगो. यह चिंता याको मोहरुपी वयार लागेतें होतहे,
तातें अपने मुल भगवान हे, सो दृढ हे सो मोको
लौकिक अलौकिककी चिंता नाहीं हे, सो भुलि जातहे,
तब लौकिक कुटुंब मिलिके याको अन्याश्रय करावत हे,
सो या प्रकार करत हे. ओर लौकिकमें कोइतो कहतहे,
जो तुम कोइ देवताको मनावो, तुमको सुख होयगो
तुमारो भलो होयगो. ओर कोइ कहतहे, जो तुमारो
मित्र भलो होय तो मिलोगे, तब तुमारो कष्ट दुर होयगो.
ओर कोइ कहतहे, जो देवीकी मानता करेतें भलो
होयगो. यह दुर्बुद्धि जीव एसे करत हे, तब यह जीव
अन्याश्रय करतहे, सो ज्यों ज्यों करत हे त्यों त्यों श्री
ठाकोरजी सों दुरी परतहे, सो अन्याश्रय करीके भग
वानतें बहिमुर्ख होत हे, ओर मोहरुपी वयार केसी हे

जो जीवको श्रम [illegible] है. ओर दृढ अनन्य भक्त है सो तो अन्याश्रय सर्वदा नही करतहै. ओर जब कछु लौकिक सुख दुःख [illegible] होतहै. तब यह दृढता राखतहै. जो श्रीजी करेंगे सो होयगो. में तो दासहों. सुख दुःख तो देहके [illegible] होतहै. सो देहकु भोगेतें छुटेगो. एसी दृढता राखनी. एसी दृढता राखत है, तिनको दुःख [illegible] निवृत्त होतहै. प्रथम तो भगवदियकों दुःख नाहिं होतहै. ओर होतहै सो पाछिले प्रारब्धसों होतहे. सो [illegible] मानत नाहीं. या प्रकार दृढ आश्रय श्रीठाकुरजीको करे ताकों भगवदिय कहिये. ओर जो वैष्णव होय कें अन्याश्रय करतहै. ओर असमर्पित वस्तु खातहै. तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी बहुत दूर रहतहै; यह निश्चय जाननो. सो यह समजीकें वैष्णवको यह [illegible] जो अन्याश्रय न करनो. असमर्पित न खानों, तातें अपने मनमें दृढ आश्रय एक श्रीजीकोही करनों, तब वैष्णव या लोक परलोकमें सुख पावें. या प्रका श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति कहेहै

इतिश्री गोकुलनाथजीकृत प्रथम वचनामृत संपूर्णम्.

[illegible] दीन होय प्रीति राखें. ओर अहर्निश श्रीजीको ध्यान राखें. द्रव्यादिककुं सुमार्गमें. गुरुसेवा. वैष्णव सेवामें उठावें ओर अपने शरीरभोगार्थ न उठावें. ओर लौकिक वैदिक [illegible] होय तो [illegible] प्रभुकों दिखाय आज्ञा लइ उठावें. ओर वैष्णव पास मान छोडिकें जाय, ओर निःशंक होयकें भगवद्स्मरण करे. जहां भगवद् वार्तामें संकोच होय, तहां भगवद्धर्म न वढे. ओर संदेह रहे. ताते संदेहकी निवृत्ति होय तहां प्रीति वढे ओर ज्ञानहोय, ओर काहुको बुरो न होय, दुःखमें धीरज धरें. ताको उत्तम वैष्णव जाननो. या प्रकार श्री गोकुल-नाथजी कल्याण भट्ट प्रति आज्ञा कीये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत तीसरो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत ४ थुं.

अब श्रीगोकुलनाथजी वैष्णवनको चोथो लक्षण कहेतहे; जो भगवदियको क्रोध न करनों, ताको कारण यहहे, जो क्रोध हे सो चांडालको स्वरुप हे. सो जहां क्रोध होय तहां भगवद्धर्म तथा भगवान न रहे. क्रोध होत हे तब भगवद्भाव जात रहतहे. ओर क्रोधहे सों

अभिरूप हे, भगवद् धर्मको नाश करतहे. जाको क्रोध बहुत होतहे, सो क्रोधावेशमें अशुद्ध रहतहे, जेसे चांडालके स्पर्शनें सचैल स्नान करनों पडे एसो ए दुराचारीहे. सो क्रोधतें जीवको सचैल स्नान करनों पडे, नहि तो हाथ पांवतो धोवनो, ओर सोल्हे कुरला (कोगळा) करनो, चरणामृत लइ मनमें शांत होय तब क्रोधावेशतें छुटे. तातें भगवद्धर्म, भगवद्स्मरण पवित्र होय कें करें. ओर क्रोधावेशमें देह छुटे तो नर्कमें पडे, तथा अधोगति होय, क्यों जो. "तामसानां अधोगतिः"

ओर विना कारण, भगवद्सेवा संबंध विना क्रोध करे तो श्वान योनि पावे. ओर लोभतें काहुको द्रव्य चुरावे ओर पुछेतें क्रोध करतहे सो सर्पयोनिकुं पावत हें. ओर कोई वैष्णवसों ईर्षा करके भगवद्धर्म, कीर्तन आदिमें प्रतिबंध करिकें छुडावें, सो वह कुंभीपाक नरकको कीडा साठ हजार वर्ष तांइ होतहे, पाछें सुकर, कुकर, सर्प इत्यादिक योनिकुं पावें हे. तातें भगवद्धर्म संबंधी वार्ता साधारणहु होय तासों विघ्न न करनों, ओर जो क्रोध इर्षा करीकें काहुके घरमें अग्नि लगाव-

तहें सो तीनो पाप करी कें नर्कमें पडतहें. ओर इर्षा तथा क्रोधतें काहुको विष देतहें. अथवा जलमें डुबा- वतहें. तथा शस्त्र ले [illegible] करतहें. सो नर्क भोगके सर्प योनिकुं [illegible] हें. तिनसों दशगुणो प्रायश्चित कर- तहें तब शुद्ध होतहें. क्रोध सघरे धर्मनमें बाधक हें. महा दुर्बुद्धि होय के अज्ञानतें करतहे. तातें मन लगा- यके क्रोधको निवारण करनो. सो भगवद् इच्छारूपी खडगतें दुर करे. ओर क्रोध करिकें गुरुकी निंदा करे. तथा कठिन वचन बोले सो मुसक होय. पाछें सर्प योनिकुं पावे हे, ता पाछें प्रेतयोनि पावतहे. ओर भग- वद् अर्थ विना माता पिता सों क्रोध करतहे सो दरिद्र होतहे. ओर वैष्णवसों क्रोध करतहे तिनको सघरो सुकृत धर्मको नाश होतहे. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी आप कल्याणभट्टसों आज्ञा किये हे. सो क्रोधको महा दोष हे, सो कहते पार न आवे. तासुं यामों [illegible] रहनो.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत चतुर्थ वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत ५ मुं.

अब श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति वैष्णव

नकों पांचमो लक्षण कहतहे. जो वैष्णव होय के एक श्री भगवानकोही आश्रय जाने. ओर भगवद्सेवा विषे एकाग्र चित्त राखे. परम फलरूप जाने, ओर लौकिक [illegible] [illegible] [illegible] न राखे. ओर श्रीजीको स्वरुप श्री[illegible]में तथा [illegible] ग्रंथनमें कह्यो हे, सो तिनको दर्शन करि ध्यान हृदयमें राखे. जेसे भगवद्नाम स्मरण करे. तेसेही अपने गुरुके नामको हृदयमें स्मरण जप करे. भगवद् कटाक्ष. अंग, वस्त्र, आभरणमें अपनो मन लगायके चिंतवन करे, तथा अनेक लीला हे तिनको चिंतवन करे. ओर भगवद्नाम विना जो क्षण जाय तो हृदयमें उसास ले के ताप करे. ओर अस्पर्शमें स्नान करी. चरणामृत तथा श्रीयमुनाजीकी रज मुखमें मेले. दोउ नेत्रनसों लगाय माथे धरे, हृदयसों लगावे, तब अलौकिक दृष्टि होय. तब भगवद्धर्म माथे बिराजे. तब हृदय शुद्ध होय, ओर भगवद् मंदिरमें जाय तो छोटी मोटी सेवा अपनो भाग्य मानिके करे: पात्र मांजे. मंगलभोग धरि सज्या फेरिके समारे. मंगल आरती करी, तिथि वार उत्सव देखि

न करनो. ओर काहुके दिखायवेके अर्थ, पुजा अर्थ, उद्धारार्थें न करे. आपनो सहज धर्म जानें, जेसे ब्राह्मण गायत्री जपे. लाभ संतोषसुं सेवा करे, "एक कालो द्विकालो वा" ओर विवेक विना पुजा सेवा करे तो नर्कमें पडे, ओर पाखंडीकी पूजा, सेवा, प्रभु अंगीकार न करे. या प्रकारसों श्री गोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति कहेहें.

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत छठो वचनामृत सम्पूर्णम्.

वचनामृत ७ मुं

अव श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति वैष्णवनसों सप्तमो वचनामृत कहत हेः—जो वैष्णव होय के काहुको अपराध न देखे. अथवा सुनेहु नहीं. यद्यपि काननसों सुने ओर आंखनसों देखे परंतु मनमें रंचकहु न लावे. यह जाने जो में मायावाद रुपी अविद्यामें पर्यो हुं. सो मोकों दोष दीसत हे. इनमें रंचकहु दोष नहीं हे. उत्तमोत्तम देखे. मध्यम देखकें कहें. दुष्ट जुठी सांची लगाय ईर्षा करे. कोईसों खोटो काम करें, अपराध करे तो हु वाको भूलि जाय. वाको प्रसंन्न करिके

संकोच छुडावनो. भलो कार्य होय सो गुणकों प्रकाश करें. या प्रकार चले तो प्रभु कृपा करिके अपनी भक्तिको दान करें. सो या प्रकार [illegible] कल्याण भट्ट प्रति पुष्टिमार्गीय सिद्धांत कहतहें.

इति श्री[illegible] कृत सप्तम वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत ८ मो.

अब श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति आठमों लक्षण कहतहें:—जो वैष्णव होय सो साचो होय. ओर लौकिक अलौकिकमें कपट न राखे. ओर भगवदीयसों मिथ्या न बोले. उनकी टहल सेवा करे. उनसों भगवद चर्चा करे, उनके हृदयको भाव तथा पुष्टिमार्गको सिद्धांत अपने हृदेमें धारण करे; ओर वारंवार अपने मनमें विचारे. भगवद वार्ताको हेतु समजे. भगवदीय सों दीन व्हे रहेनो, ओर भगवदीके आगे अपनी बडाइ न करनी, ओर आज्ञा उलंघन न करनी. उनसों स्नेह बहुत राखनो. श्री ठाकोरजीको लीला वार्ताको प्रकाश न जानत होय तो दीन होय के भगवदीयसो पूछनो, अपनी योग्यता न बतावनी, उन भगवदीयन

के आगे भगवद्वार्ता चर्चा करनी. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति आज्ञा कीये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत अष्टम वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत ९ मो.

अब श्रीगोकुलनाथजी ओरहु आज्ञा करतहे:- जो कोउ निंदा दुर्वचन कहे ताको उत्तर न देनो, सब सहन करनो, अपनें में दोष जानी उनसों क्रोध न करनों. अपने मनमें खेद न करनो, और उनसो बहुत विरोध होय तो नेक दुरि रहेनो. उनके कृत्य देखिकें दोष बुद्धि रंचकहु न करनी, उनसो जयश्रीकृष्णको [illegible] राखनो. उनकी निंदा न करनी. या प्रकार वैष्णवनके अपराध ते डरपत रहेनो. एसे डरपत रहे ताको सर्व कार्य सिद्ध होय. प्रभु कृपा करि के हृदयमें पधारें. निंदा सहनी. यह वैष्णवनको सर्वापर परम धर्म हे. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति आज्ञा कीये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत नवमो वचनामृत संपूर्णम्.

मर्पनी वैष्णव गाममें न होय, तो नामधारी वैष्णवसों
पट वस्त्र थेली हाथमें पहरायके श्रीठाकुरजीकी सेवा
करावनी. साक्षात् श्रीठाकुरजीको स्पर्श न करावनों, ओर
याके हाथकी सखडी अनसखडी [illegible]
परंतु आप न लेय. परंतु आतुरमें वडो [illegible] आय
पडे तो लेनों; ओर [illegible] छुटे तब एक व्रत करे तथा
भेट काढे, तब श्री[illegible] करनों. ओर अन्य
मार्गीयपें श्री ठाकुरजी[illegible]. नामधारी न
मिले तो आपुई [illegible]. श्रीठाकुरजी
पोढें हीं आरोगे; परंतु सेवा ओरनसों सर्वथा नाहीं करा-
वनी. जो शरीरसों [illegible] तो श्रीठाकुरजीको गामके
वैष्णव तथा ओर गामके वैष्णव होय तिनके घर
पधरावने. ओर मन करिकें ताप करे जो [illegible]
न भई, तातें मन [illegible] मानसी सेवा करनी. या
प्रकारसों सेवा पहले करी होय ताहि प्रकारसों सेवा
करनी. ओर मानसी सेवाको प्रकार यहहे, जो अपने
मनमें श्रीठाकुरजीको ध्यान करिकें श्रीठाकुरजी, श्री
आचार्यजी, श्रीगुसांईजीके बालक तिनसों समर्पि[illegible]

कियो होय सो [illegible] श्रीजी तथा सातो स्वरूप अपने गुरुके सेव्यस्वरूप होय तिनको विधिपूर्वक अंतःकरणसों दंडवत् करनो: पाछें मनही करिके मंगल भोग धरि मंगला आरती करें. पाछे अभ्यंग स्नान, अंगवस्त्र वस्त्र आभूषण ऋतुके अनुसार धरावे. या प्रकार राजभोग उत्थापन, सेन पर्यंतकी सेवाकी भावना करनी, परंतु मनमें संतोष न राखे, यह जाने जो तोसों साक्षात् हस्तसों सेवा कब [illegible]. सो भगवद् सेवामें एकादश इन्द्रियनको [illegible] होत है, यह ताप करे. या प्रकारसों रहे सो उत्तम वैष्णव है, या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति कहे है.

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत दसमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत ११ मो.

अब औरहु श्रीगोकुलनाथजी ग्यारमों लक्षण कहतहें:—जो वैष्णव होय सो प्राणी मात्र उपर दया राखे, ओर वैष्णव अपने घर आवे तो प्रसन्न होय रहे, ओर जाने जो वैष्णवद्वारा प्रभु पधारे हे, यह जानि तेल लगाय, ताते पानीसों न्हवाय, सुंदर ऋतु अनुसार

वस्त्र पहिराय, नाना प्रकारके महाप्रसाद लिवावे. जो सामर्थ्य होय तो समयके लायक सनमान करि प्रसन्न करनों. ओर काहुको ऋण काढिके न करनो, ऋण हत्या बराबर हें. काहुको दुःख देकें कार्य न करनो. यह मार्गमें वैष्णवको रहनों, ओर अन्य मार्गके श्रीठाकुरजीकी सेवा न करनी, ओर विना मर्यादीके ठाकुर अपने श्रीठाकुरजी पास न बेठावनें, ओर अपने श्रीठाकुरजीकी सामग्री विना मर्यादीको न देनों. प्रसादी होय सो विना मर्यादीके श्रीठाकुरजी आगे भोग धरनों. सो प्रसाद मर्यादी न लेय. लीलाको भाव अन्यमार्गी तथा पात्र विना न कहनों. पुष्टिमार्गमें अनन्य होय तासों मिलिके निवेदनको तथा लीलाको भाव स्मरण करनों. ओर अपनें गुरूने मंत्र दियो होय, अष्टाक्षर, पंचाक्षर, तिनको प्रकाश जहां तहां पात्र विना न करनो. अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा जहां तांइ बने तहां तांइ ओरके घर न पधरावनी, अपने घर सेवाको सौकर्य सामर्थ्य न होय तो ओरके घर जाय दोय घडी सेवा करें, परंतु रंचकहु, नियमपूर्वक करनी

कछु हानि भये तें दुःख न मानें. गृहस्थधर्मके शास्त्र काहु सों सुनिकें लौकिकमें लीन होय न जानो, पुष्टिमार्गीय संबंधी शास्त्रके वचनको विचारत रहेनो. ओर सब शास्त्र पुष्टिमार्गते अंतराय करवे वारेहे, यह निश्चय जाननो. ओर भगवत्कार्य, गुरुकार्य, वैष्णव-कार्यमें मन राखें. जेसे जलतें कमल न्यारो हे तेसें लौकिक वैदिकतें न्यारो रहे, ओर श्री भागवत तथा श्रीआचार्यजीके ग्रंथनको भगवदस्वरूप जानें, ओर श्री[illegible]जीको पाठ तथा जप मन लगाय के करनो, यह पुष्टिमार्गीय वैष्णवकी गायत्री है. तातें सगरे प्रति बंध दूर करि पुष्टिमार्ग को फल पावे, ओर श्री यमुना-ष्टक आदि पाठ नित्य करने, ओर श्री सर्वोत्तमजी को पाठ जप विश्वासपूर्वक करनो, गद्य के श्लोक को भाव [illegible] के ताप क्लेश करनो, ओर सदा पवित्र रहनों. कुचैल मनुष्य को छुवेह की ग्लानि राखे, वैष्णव के वस्त्र में बहुत ग्लानि न राखें. अलौकिक देहसों लग्यों रहे, ओर काहुके दिखायवेकें लिये बडी अपरस न राखे. ओर जहां तहां विचारे विना खान पान न

करनों, या प्रकार श्री गोकुलनाथजी आज्ञा करत हैं.

इति [illegible] संपूर्णम्.

[illegible] १३ मो

अब श्री गोकुलनाथजी तेरमो लक्षण कहत हैः—
जो भगवदीय वैष्णव को काहुसों विरोध न राखनों, ओर जहां क्रोध की वार्ता होय तहां ठाडो न रहनो, ओर सबनसों सर्वात्म भावसों हित राखनो. उनकी बात झुठी होयसो अपने कहेसों खेद पावे सो न कहनो. ओर साची कहे ते खेद पावे सोहु न कहनों. याही प्रकार विवेकपूर्वक चलनो. ताको भगवदीय कहिये. ओर वैष्णवकी निंदा करे तो नरकमें परे. तहां विचार हे जो वैष्णव कुमार्ग चले तो समजावनो. जनमें दोष लायके निंदा न करनी अथवा मार्ग की रीतिसों विपरीत चले ताकों वैष्णव न जाननों. यद्यपि बडो पंडित होय, ओर समजवे वारो होय. परंतु वाको अपने संप्रदाय को ज्ञान न होय तो वाको संग बडो दुःखदाइहे. ओर थोरो समजे परंतु पुष्टिमार्ग में तत्पर होय ताको संग हितकारी हे, वैष्णवकी निंदातें कोटि

कोटी अपराधनें दुःखी होय. ओर वैष्णव होय के लौकिक वस्तु में तृष्णा न राखे, ओर कामनातें दुर्बुद्धि होय, ओर तृष्णातें केवल स्वार्थ होय, भलो बुरो न सुझे; केवल स्वार्थ होय तब प्रसन्न होय, स्वार्थ न होय तो निंदा करे ओर तृष्णातें मन में संकल्प विकल्प होत हें, तब अपनों स्वरुप, अपनो धर्म भूलि जात हें. तब मनमें अनेक प्रकार के [illegible] मांग उठत हे. सो लोभतें भलो बुरो कार्य सुझे नाहीं. ओर विवेक ज्ञान सब जात रहे, तब जुठी साची बात बनाय के अपने कार्य में तत्पर होत हे, द्रव्य तथा वस्तु लेत में डरपत नाहीं हे, ओर द्रव्य की रक्षा के अर्थ अनेक जतन करत हें, तातें वैष्णवको लोभ तृष्णा करनी उचित नहि हे, वैष्णव को अपराध होयगो तब श्री ठाकुरजी मति कहुं अप्रसन्न होय जाय? ओर यह काल तो सगरे जगत को ग्रसत हे. सो मोहुको ले [illegible], तातें लौकिक वैदिक में आसक्त न होय, ओर करे विना न चले तातें सहज में बने सो करे. परंतु मनते आसक्त न रहे, यह मनमें जाने जो अपने धर्म विना सहाय

करिवेवारो कोइ नहीं है. अपनो वैष्णव धर्म गयो तव सव गयो. सो वैष्णव धर्म दृढ होय तो प्रभु सहाय करे. ओर धर्म गयो ओर कछु लौकिक सिद्ध भयो तो वे लौकिक चारि दिन में जात रहे, ओर परलोक बिगडे. तातें भगवद्धर्म को माहात्म्य हृदेमें राखिके केवल प्रभुनको आश्रय करनों, ओर स्वार्थतें धर्म जाय. अथवा लौकिक विषयादिक सुख के अर्थ करे तो धर्म जाय. ओर श्रीठाकुरजीतें गुरु विषे अधिक प्रीति राखनी. यह जाने जो कछु भयो हे. सो इनकी कृपातें भयो हे. ओर आगेहु इनकी कृपाते होयगो. सो तो योगेश्वर के प्रसंगमें कह्यो हे. जो श्रीठाकुरजी में वडी प्रीति होय ओर गुरु विषे भाव तथा वैष्णव विषे दया नहीं होय तो वे सव राखमें होमत हे. ओर वैष्णव को तथा गुरु को साक्षात् प्रभु साक्षात् अपनो करके मानते हे. और वैष्णव सो मिल के अपने जन्म जन्म के प्राणप्रिय श्रीठाकुरजी तिनको स्मरण करे. सो मनमें यह मनोर्थ राखे जों श्रीठाकुरजी प्रसन्न कव होय. लौकिक कार्य अर्थ न राखे. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट

प्रति वैष्णव के लिये शिक्षा दिये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत तेरहमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत १४ मो.

अब श्रीगोकुलनाथजी चौदहमो लक्षण कहते हे.- जो वैष्णव लौकिक वैदिक कार्य, देहकार्य, अनित्य करि जाने. ओर पुष्टिमार्गको धर्म सत्य जानि कार्यमें तत्पर रहे. ओर को धर्म तथा लौकिक कार्य तुच्छ जानि दुःख-रूप जाने, ओर तीर्थको माहात्म्य सुनिके मनको सेवा स्मरणतें चलावनो नहीं, ओर तीर्थ को फल तुच्छ करि जाने; जो गंगाजी सरखे तीर्थ जगतमें कोउ नाहीं सो "रुक्मिणी मनमेंहु न लाई," ओर वेद, पुराण. शास्त्र, श्रीभागवत. गीता इनके वचन सत्य करि जाने. परंतु अनेक प्रकार के अधिकारी हें तिनके अर्थ जाननों. ओर पुष्टिमार्गके वचन तथा धर्म मनमें राखनों, ओर अनेक प्रकारके फल तुच्छ करी जाननो. ओर जयंति आदि व्रतकों सत्य करी जाननों. परंतु फल की कामना मनमें न राखे. ओर भगवद्सेवा स्मरण सर्वोपरि जाने. ओर लौकिक विषय के अर्थ स्त्रीको न जानें, ओर

विषय हु ... पुत्र होवेके अर्थ करे. ओर भगवद सेवा अर्थ स्त्रीमें प्रीति राखे. ...सें भगवद वार्ता दैन्य पूर्वक करे. अपनी उत्कर्षता न जनावे. ओर ...को ज्ञान न होय तो शुद्ध भावसो प्रश्न करे. ओर भगवद्भावकी वार्ता अपने मनमें दृढ विश्वास करें राखे: उन ...की ... चेष्टा न देखे. सो भगवद्धर्म हृदयमें दृढ करिके रहे. या ... श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजीके चौदमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत १५ मो

अब आगहु श्री गोकुलनाथजी ... सिद्धांत कहतहे:—जो वैष्णवको लौकिकमें आतुरता न राखनी. लौकिककी उत्कटता सों सेवा विषे उद्वेग होय. तब प्रभु प्रतिबंध करे. सो कहे हे "उद्वेगः प्रतिबंधो वा भोगोवास्यात्तु बाधकः" एसे कहे हे. सो सेवामें लौकिक ...को समाधान न करे. ओर सेवामें गुरुको कार्य तथा भगवदीयको कार्य करे. तो चिंता नाहीं. सो प्रभु अपनो कार्य जानी वेगेही प्रसन्न

ओर मुखरता दोष बहुत बडो हे सो विचार राखनों. लौकिक वार्ता कहे सुनेते भीतरते आसुरावेश होय तासों सेवामें काहुसों संभाषण न करनों, ओर लौकिक वात हु न करनी. ओर सेवा विषे बहुत बोलनों नाहीं, ओर काहुकी जुठी सांची करनी नहीं. श्रीठाकुरजीकी प्रीतिसों प्रभुनको उपकार मानिके टेहेल करनी. एसे जानके करनी जो प्रभुनने कृपा करिके टेहेल करवाइहे, ओर सेवा करिके कछु लौकिक वैदिकमें वासना न राखनी अपनो मुख्य वैष्णव धर्म जानि सेवा करें. ओर वैष्णव होयके कछु दुःखमें व्यास न होनों, ओर श्रीठाकुरजीके वस्त्र आभ्रण सामग्री स्वरुपात्मक जाने. तातें प्रभु संबंधी होय तो अपनों लौकिक न जाने, ओर प्रभुनको नये वस्त्र कराय, प्रसादीमो अपनो कार्य चलावे, ओर आप विना प्रसादी पेहरे तो बहिर्मुखता होय. ओर चिंता कष्ट काहु वातकी अपने मनमें न लावे. ओर अपने भोगकी निवृत्ति दुःख करके जाने. सुखमें प्रभुनको भूलिजात हे. तातें सुखतें दुःख भलो, "जो प्रभुनको स्मरण तो होय. सोइ कुंताजीने कहोहे जो विपत्ती

भली जामें आपको दर्शन होय." ओर पुष्टिमार्गीय पंचाक्षर मंत्रको जप करनों. ओर भगवद् नामके भूले ते आसुरावेश होय है. ओर [illegible] न्याय [illegible]. ओर श्रीठाकुरजीकी बाललीला. [illegible] ओर ब्रज संबंधी लीला, इनको गान सुनेतें श्रीठाकुरजी वेगेही प्रसन्न होय. ओर भगवदीय [illegible] आगे लीलाको गान करनों, [illegible] कोइ बैठो होय तो [illegible] बात कहेनी, शिक्षाके कीर्तन गान करने. जो भक्तिमार्गको द्वेषी [illegible] बैठ्यो होय तो अपने मनमें गुनगान भगवद्स्मरण करनों: बाहिर अपने धर्मको प्रकाश करे नहीं. ओर [illegible] से [illegible] तथा भगवद्धर्म बढायवेको उपाय करनों. ओर काम, क्रोध, मद, मत्सरता, लौकिक आवेश, सर्वथा दूरि करनों, अपने पास तथा ओर [illegible]के पास लौकिक आवे तो भगवद्धर्ममें मन लगायवेको शिक्षा करनों. ओर न माने तो कछु बोलनो नहीं. ओर वासों बहुत प्रीति न करनों, ओर भगवदीयके मिलिवेको उपाय करनों, उनकी टहल करी, प्रसन्न करी, भगवद्धर्म पुछनो

सो विश्वास करी पुछनों. चलनो, ओर जो कछु भग-
वद्धर्म न बनी आवे तो ताप क्लेश करनों. ओर भग-
वदीयको तथा अपने गुरुको घर लायके प्रसन्न करनों,
ओर भगवदीयसों लौकिक वार्ता न करनी जो, यह काल
परम दुर्लभ हे, सो यह जानीके पुष्टिमार्गको प्रकार पुछनों,
ओर भगवदीय देशांतरते आये होय तो उनसों मिलनो,
जो भगवदीयके हृदयमें प्रभु विराजतहे, सो तिनके
मिलेते हृदय पवित्र होय, तब अपने हृदयमें प्रभु कृपा
करिके सर्वथा पधारें, यह भाव जाननों. या प्रकार
श्रीगोकुलनाथजी वैष्णवको शिक्षा किये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत पंद्रमो वचनामृत संपूर्णम्

वचनामृत १६ मो

अब औरहु श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा करतहेः—
जो वैष्णव देश परदेशकुं जाय, ओर तहां श्रीप्रभुजी
बिराजत होय, तो तहां चलके जाय. ओर श्रीवल्लभ-
कूल बिराजत होय तो महा नम्र होय जायके दर्शन
करे, ता पाछे जलपान करे. ओर जहां अन्यमार्गीय
पूजा होय तो तहां सर्वथा न जानों; ओर जहां श्रीपुष्टि

पुरुषोत्तम विराजत होय. ओर श्रीबालकृष्ण विराजत होय तहां खाली हाथ न जानो. ओर नित्य न बनी आवे तो, जब जाय तब. अथवा विदाय होय तब. यथाशक्ति फलफूल पहुंचावनों. ओर भेट करनी. ओर श्री नाथजीके दर्शनमें आलस्य न करनो. ओर प्रभुनके दर्शनमे आलस्य करे तो अज्ञान बढे. प्रभुनकी सेवा करत होय, ओर दर्शन होय चुके. तो अपराध नहीं; दर्शनतें ज्ञान होय. ओर ज्ञान हृदेमें भयेते भगवद स्वरुप हृदेमें आरुढ होय. ओर अज्ञानतें विषयादिक आसक्ति होय, ओर जप करे सो काहुसो जतावे नहीं. जप भावहे सो अत्यंत गोप्यहे. ओर शास्त्रमे कहे हे जो जप एसे करनों जो होठ रंचकहु खुले नहीं; या भांति भितर अनुभव करतहीं जप करनो. ओर गौमुखीकी माला वहार काढनों नहीं. ओर माला भीतर उरझि जाय तो उपरके मनिका निकासिके सुरझायके एसे धरे, जो फिर न उरझे, ओर मनिका १०८ राखे, तिनसो जप करे, ओर सुमेरको उलंघन न करे, सुमेरको उलंघन करे तो लीलाते बाहिर परे,

जपको फल तिरोधान होय; ओर गौमुखी उपरणामें ढांकीके जप करनो, ओर गौमुखी हे सो अलौकिक हे, ओर जपमें बोलनो नाहीं; देह मनको चंचल न करनो, नेत्र मुंदे रहे, सो लौकिक में दृष्टि न जाय. जपकी सेवाकी साधारण लौकिक क्रिया न जाने, जो लौकिक जाने तो वासो प्रभु जप न करावे, ओर प्रतिबंध होय, तातें सेवा जपको माहात्म्य भुले नाहीं, माहात्म्य भुले ओर याको साधारन जानें, तब आलस्य होय, आलस्यतें अज्ञान होय अज्ञानतें दुर्बुद्धि संसारासक्ति होय संसारासक्तिते श्रीठाकुरजीते बहिर्मुखता होय, यह कहे जो सेवा दर्शन ओर जप पाठतेकहा होयगो. ओर लौकिक विना निर्वाह केसे होयगो. ओर वैष्णव मिले तो पाखंड करिके कहे जो, सेवा दर्शनमें कहा हे ? ओर मन लगेगा तब कार्य होयगो. सो वे तो योंहि पचिमरतहे, सो या प्रकार सिध्धांत करि लौकिकमें तत्पर होय. ओर मन हे सो भगवद् सेवा कीर्तन वार्ता करने ते लगेगों, परंतु जीवकी उलटी गतिहे, तातें भगवद्-धर्ममें मन लगत नाहीं, सो याही प्रकार दुष्ट सिध्धां-

तातें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होतहे, और भगवद्धर्मको एसो साधारन न जाने. अलौकिक जाने. और यह कहे जो, मेरी लौकिक देह तामों श्रीप्रभु कृपा करीके अलौकिक सेवा करावेहे, और लौकिक जीव्हातें भगवद् नाम लिवावेहे, सो बडी श्रीप्रभुनकी कृपा तें प्राप्त भयोहे. लौकिक तो सबरी योनिमें सिद्ध होत आयो है. और प्रभुके स्वरूपको दर्शन सेवा स्मरण जप पाठ तो परम दुर्लभ है; सो यह माहात्म्य जाने तब प्रीति होय. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी आपश्रीमुखते प्रति वैष्णवको शिक्षा दिये है.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत षोडशमो वचनामृत सम्पूर्णम्

वचनामृत १७ मो

अब श्री गोकुलनाथजी सत्रहमो वचनामृत कहतहे:—सो वैष्णव होय सो या प्रकार पुष्टिमार्गको सर्वोपरि जानें, तब पुष्टिमार्गमें रुची होय. सर्वोपरिमार्ग कब दीसे ? जब पुष्टिमार्गी अनन्य भगवदीयको संग होय. दैन्यभावसों भगवदीयके कहेको विश्वास होय. तब फल सिद्ध होय, और भगवदीयको लौकिक न

जाने. जो भगवदीयके हृदयमें प्रभु बिराजे हे. ओर भगवदीयकी देह, इंद्रिय, मन अलौकिक हे, सो उनके संगते यह अलौकिक होय. सो अलौकिक केसे जानिये ? जो दुःखमें विवेक, धैर्य, आश्रय दृढ होय, ओर काहुतें कपट, छल, निंदा, काहुको बुरो न चीते. ओर चोरी तथा विषय लौकिक न करे, जो कोइ संजोग पायके होय जाय तो बहुत खेद पावे, एसे भगवदीयको संग सदा करनों. जेसे श्रीठाकुरजीके दर्शनतें पवित्र होय, एसे भगवदीयके दर्शनतें पवित्र होय, भगवदीयको संग होतही मनमें आनंद तथा भगवद्धर्मकी स्फुर्ति होय, ओर भगवदीयकी सेवातें श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न होय, और भगवदीयके संगतें असमर्पित अन्याश्रय छुटे, असमर्पित लियेतें आसुरावेश होतहे. अन्याश्रयतें वैष्णवधर्म पतिव्रत जातहे, जेसे व्यभिचारिणी होय हे, ताकों भ्रष्ट जाननों. पुष्टिमार्गमें अंगीकार न होय, अनेक मायाके दुःख पावें, ओर वैष्णवको अपने अर्थ उद्यम न करनों, ओर मनमें यह विचारनो जो व्योहार किये तें प्राप्ति होय तो

वैष्णव सेवा, गुरु सेवामें कछु अंगीकार होय. सो यह भाव राखे. तो लौकिक व्योहार बाधक नाहीं होय. अपने कुटुंबको भरण पोषण चल्यो जाय, ओर भगवद्धर्म बढे. ओर व्यवहारहु अलौकिक करे, अनिषिद्ध सत्यको करे. ओर वामे हू सघरो दिन पच्यो न रहे; राजभोग पाछे उत्थापनके भीतर इतनेपें करे. सो इतनेहीमें आवनहार होयगो सो प्राप्त होयगो. सो सेवा दर्शन नियमसों करे. ओर बहु द्रव्य कमावे तो अपनें घर श्रीठाकुरजी तथा गुरुनको पधरावे. ओर वस्त्र आभुषण भेट करें, ओर अलौकिक मनोरथमें चित्त राखें. ओर नाना प्रकारकी सामग्री करकें श्रीठाकुरजीको आरोगावें. ता पाछे वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावें. ओर द्रव्यको संकोच होय तब हु श्रीठाकुरजीके पात्र तथा आभरन वस्त्र इनमें अपनी सत्ता न जाने, या प्रकार अपराधतें डरपत रहें ओर धीरज राखे. यों न जाने जो राजा कुटुंबिको भय राखिकें अपने गुरुके घर पधराइये तो सुख होय तो वैभव बढावनो नही. ओर नाना प्रकारकी सामग्री भोग धरी पाछें वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावे. तामें

द्रव्यकी सुफलता होय, तातें कोइ बातको दुःख नपावें, ओर छीन छीनमें प्रभुनको नाम स्मरण करनो. ओर मनमें दयाभाव राखनों. अहंकारादिकमनमें न राखनों, याप्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टप्रति कहे हें.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत सप्तदशमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत १८ मो

अब श्रीगोकुलनाथजी अढारमों वचनामृत कहत हेः—जो जहां अपने मार्गकी निंदा तथा श्रीवल्लभ कुल की निंदा, अपने पुष्टिमार्गकी निंदा; वैष्णव की तथा धर्मकी निंदा होय एसे दुष्ट जीव के पास कबहु न बेठिये, ओर अवश्य कारण पायकें मिलाप होय तो अपने पुष्टिमार्गकी चर्चा वार्ता करनी नहीं. ओर कोउ चलावे तो वाहि गोप्य करि राखें, सो तहां प्रकाश न करें, ओर प्रकाश करें, तो अपराध पडे, सों काननमें निंदा सुने तें यह शास्त्रमें कहेहे जो अपने प्रभु की निंदा सुने अथवा करे तो ताकी जीभ काटि लीजे. ओर अपनी वश न होयतो तहांते भाजि जानों, परंतु

उन्नीसमो लक्षण कहत हैं:—जो वैष्णव होय के भगवदीय पास आवे तो वाके संशय दुरि करि पुष्टिमार्गीय भगवद् धर्म बढावे, सुगम उपाय बतावे, तातें वैष्णवको मन बढे सो नवरत्न में कहत हैं "अज्ञानादथवा ज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनम्" सो अज्ञान करिके अथवा ज्ञान करिके शरणही आवे सो शरण आये तें जीवको सर्व कार्य सिद्ध होय हे. ओर कहे हें जो. "निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः" सो शरण आये पाछें वैष्णव को संग करे तब ज्ञान होय. तापाछें ताप क्लेश समझे, ओर प्रथम कठीन उपाय कहेतो शरण आयवेमें जीवको बडो संदेह पडे. तातें क्रम क्रमसों सेवा स्मरण तथा लीलाकी भावना ताप स्नेह बढावे. ओर अनन्य भगवदीकों अपनों हितकारी जाने, ओर पुष्टिमार्गसों विपरित धर्म बतावें ताको अपनो शत्रु जाननो. तातें प्रेमदिशावारेकों संग करनो. ओर सतसंग विना या कालमें दुःसंग बहुत मिलत हे, ता करिके याके भगवद्धर्मको नाश होयहें. सो या काल विषे अनेक प्रकारके प्रतिबंध आयके पडत हें, तासों

करनी, तातें भावना में प्रथम प्रभुनके शृङ्गार में मन लगावे, ओर जन्म जन्मकी अविद्या करिके भगवद्‌स्वरूपमें मन लागत नाहीं, सो शृंगारमें तो अद्भुत छबि देखिके मनको शृङ्गार करे तब कार्य होय, तब कल्याणभट्ट प्रश्न कियो, जो महाराज शृङ्गारको कछु वर्णन करिये. सो अब श्रीगोकुलनाथजी शृङ्गारको वर्णन करतहे, जो प्रथम तो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें मन लगावे, सो परम कोमल सुकुमार, तिनमें सोरह चिह्न हें, ओर प्रथम वडके पत्र आरक्त होय तेसें वामचरण पुष्टि, दक्षिण मर्यादा तिनमें दश नखनकी कांति चंद्रमावत् तापहारि तिनमें नूपुर आदि नख भूषन जडाउ, ताके उपर जेहरि पायल, झांझर, कडां, सांकळां आदि, ताके उपर गुल्फ सुंदर, तापें घुघरूं, तापर जंघाकदली स्थंभवत् ओर कटि केसरिवत् पतरी, तापर किंकिणी, तथा पीतांबर, धोती, सुथन, ओर त्रिवली, ओर हृदय विशाल ता उपर चोकी, पदक, धुकधुकि, चंपाकली बंधीहे, ओर वैजयंती माला, मोतिनकी माला, कंदबके कुसुमनकी माला. तापर कंठसरी, सांकलां, पगलां,

भुजमें बाजुबंध जडाउ, फोंदना, श्यामवलय, पोहोंची, कंकण, हस्तफुल, नखावली १०, ओर श्रीहस्त, तामें लाल मुरली, तापर नंगजडाउ, ताके पास चिवुक, हीराके भुषण, ओर अधर नीचे मंदहास्य दंतकांति, कोटि विजलीवत्, या भांति आगें आरक्त मुख, ओर नासी-कामें वेसरको मोती, दोउ नेत्रमें लावण्य कटाक्ष, पांच प्रकारकी चितवनि, मनहरण. दोउ भृकुटी काम धनु-षवत्, सुंदर भालपर कुंकुमा; तथा केसर कस्तुरीको तिलक, भोंहपर कुंडल मकराकृत, मयुराकृत, कर्णफुल उपर कर्णिकालसत, मस्तक उपर मुकुट, कुलह, टीपारो, ग्वालपगा, भांति भांतिके रंगनके उडाउ, मणिमाला गुंजा, ओर चरणारविंदमें तुलसी गंध, दोउ ओर दामिनीवत् ओर भक्त अनेक प्रकारकी लीला करे या प्रकार मनकों स्वरूपासक्तिको वारंवार विचार करें, तब सहजमें ध्यान हृदेमें ते न टरे, तब लीलाकी भा-वना होय, ओर नाना प्रकारकी सामग्री तथा कुंजके उत्सवादिककी सामग्री करें, भावना करें, या प्रकार मानसी करी दंडोत करे. तब प्रभु कृपा करिके हृदेमें

पधारें, तब लौकिकमें ते देह छुटी अलौकिकमें लगें. तब रोमांचित होयकें रुदन करें. या प्रकार प्रेमकी दशा होय, ताके भाग्यको पार नाहीं. सो या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्टसों आज्ञा किये हैं.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत वीसमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत २१ मो

अब श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति इकवीशमो वचनामृत कहत हेः—जो वैष्णव संयोगको स्मरण करी आनंद पावे. कबहु विरह करि दीन भावको प्राप्त होय, यह दैन्यता फलरुप हें, दैन्यतातें संतोष होय, तातें श्रीठाकुरजी अति प्रसन्न होय, ओर जब निःसाधन होय तब यह विचारियेः—

चित्तेन दुष्टो वचसापि दुष्टः कायेन दुष्टः क्रियापि दुष्टः ।
ज्ञानेन दुष्टो भजनेन दुष्टो ममापराधः कतिधा विचार्यः ॥

या प्रकार अपनेको समाधान करि, हीन जानि मनमें प्रभुको दास भाव राखे. ओर अपने स्वरुपको वारंवार विचारनों जो में कोन गिनती में हुं, ओर मेरी देह मलमुत्रसों भरीहें. ओर जीतनी वस्तु सब

कोटी कहीहें तितनी मेरी देहमें हें, सो ओरतो में कहा देखुं सो हाड, मांस, चर्म, थुंककी भरी हें, अनेकद्वार करिकें मल वहतहें, एसो जो में महा दुष्ट अज्ञानीहुं ओर काम क्रोध, मद, मत्सरतासों भर्यो हुं, ओर मोहरूपी बेडीसो बंध्यो हुं, अनेक दुःख संसारमें भोगत हूं, सो एसो जो में, तो मोकुं संसारमें कहुं ठिकानो नहि हे, ओर श्री आचार्यजी परम दयाल हे, सो मोको पतितकों शरण लीयो हे, सो में पुष्टिमार्गमें शरण आयो. नातर मोको तो नरकमें हुं ठिकानो नहीं हतो. तातें श्री आचार्यजीने परम कृपा करिके शरण लेकें अपनो पूर्ण पुरुषोत्तमकों संबंध करायो हे. सो अब मोको यह कर्तव्य हे, जो दृढता करिके श्रीपुरुषोत्तमके चरणारविंदमें मन लगायके रहेनो. ओर कोटानकोटि जुग भ्रमत महा दुखित भयो हुं, ताते संसारमें तें मन काढीके प्रभुनके चरणारविंदमें मन लगाउं, या प्रकार अपनें छिन छिनमें संभारे तब दीनता उत्पन्न होय, ओर सब वस्तुमें भगवद् इच्छा जाने. ओर उद्यम होय सो करे. ओर जामें धर्म जाय सो न करनों. ओर धर्म

गयो सो सब गयो, ओर सघरो स्वार्थ गयो. ओर अपनी खरी मजुरी होय ताको श्रीठाकुरजी अंगीकार करतहे; यह अपने मनमें निश्चय करे, जो कोइ श्रीठाकुरजीको नाम लेकें वस्तु लावे, ओर श्रीठाकुरजीको समर्पे नहीं ओर तामें ते खानपान करे तो पातकी होय ओर श्रीठाकुरजीकी वस्तु अपने खानपानमें लावें, ओर भगवद्धर्म वेचीके लावे तो सघरो भगवद धर्म नष्ट होई जाय. एसेंही कीर्तन करके देह निर्वाह चलावे, ओर भगवद धर्मको प्रगट करी, अपनो निर्वाह चलावे, ओर गृहको पोषन करे, तो ताको कछु भगवद धर्म फल न होय. ओर संसारमें संसारीकी रीति होय तेसें चले. ओर काहुको बुरो हु न करे. ओर लोग जाने जो केवल संसारी हें, जहां एतन्मार्गीय वैष्णव मिले तब भगवद धर्मकी चर्चा वार्ता करे. ओर वैष्णवके आगे अपनी वडाई तथा अपनो पुरुषार्थ न करे, जो मेंही कमातहुं, तातें मेरो गृहस्थाश्रम चलतहे. एसे विचारे जो प्रभु वडेहें सो सबको पालन पोषन करतहे, ज्ञान मार्गमें साधनमें कष्ट त्याग दृढ होय, तब उद्धार होय,

ओर पुष्टिमागमें या प्रकार चले तो गृहस्थकों उद्धार
होय हे. सो संसारीके उद्धारार्थ यह मार्ग हे, तामें त्यागि
विवेकी होय तो कहा कहेनो, यह ज्ञान तादृशी भग-
दीयतें होय. याको दुसरो प्रकार नाहीं हें. या प्रकार
श्रीगोकुलनाथजी वैष्णवको आज्ञा किये हें.
इति श्रीगोकुलनाथजी कृत एकवीसमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत २२ मो

अब औरहु श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति
आज्ञा करतहें, जो वैष्णवको मिथ्या भाषण सर्वथा
नहीं करनों, क्योंकि जुठ बराबर पाप नहीं हें. जो
राजा युधिष्टिरनें ईतनो कह्यो "जो नरो वा कुंजरो वा
अश्वस्थामा मर्यो" सो इतनेही पापतें नर्कको दर्शन
करनों पर्यो. सो मनमें बहुत दुःख पायो. सो तामें
जे ताके दुःखको तो पार नाहीं. तातें मिथ्या भाषण
सर्वथा न करनों. तातें मिथ्या भाषणको महा पाप हें.
और श्रीठाकुरजीकी रसोइ जाके ताके हाथसों न करा-
वनी. अपने हाथसों पवित्रतासों करनी. ओर रसोइको
कार्य दुःखरुप न जाननों. जो मोको श्रम होयगो. कैसे

करूं, धुंआ नहीं सह्यो जात हे. ओर या पुष्टिमार्गमें तो श्रीठाकुरजीकी रसोइकी टहेल परम उत्तम हे. जहां तांइ अपनो शरीर चले तहां तांइ ओरके हाथ रसोइ न करावे. सेवा शृङ्गार तो करावे. परंतु रसोइ तो अपने हाथसौं इ करे. ओर रसोइकी अपरस न्यारी राखें. ताको उत्तम भगवदीय कहिये. ओर शरीर न चले तो; अवश्य आय पडे तो ओरके हाथ करावें. परंतु मनमें ताप राखे ओर रसोइ करकें आपही खाय के न बेठि रहे. क्योंको दोष लागे. तामें प्रथम वैष्णवको लिवावे. ता पाछे आप लेय. ओर वैष्णवको मुख्य करी दास भाव राखे. ओर दास तो ताको कहिये जो वैष्णवकी जुठिन खाय, ओर मार्गकी तो यह मर्यादा हे. जो श्रीठाकुर-जीकी तथा श्रीवल्लभकुलकी जुठिन खाय. इन विना ओर की खाय तो भ्रष्ट होय जाय. या धर्मसो उपर वैष्णवकी जुठिन लेवेकी कही ताको निराकरण करतहें. जो मुख्य तो व्रजभक्तनको स्वरूप गाय हें; सो गायकों प्रथम महाप्रसाद खिलावे ओर वैष्णवको खिलावे, ता-पाछें यह सघरों महाप्रसाद वैष्णव को जुठिन भयो.

ओर वैष्णवकी सामर्थ्य न होय तो ओर अपनों कार्य
जेसे तेसे चलावत होय तो गायको भाग तो अवश्य
दे. ओर यह रसोइ करे हे तब गाय, पृथ्वी, मनुष्य,
देवता, पितृ ये सब आशा करे हें. सो जब गायको
ग्रास काढे तब ये सघरे तृप्त होय जाय. तातें
गायको भाग अवश्य काढनों. जो यह वैष्णव ओर
मनुष्य मात्रकों धर्म हे. ओर श्रीठाकुरजीकी साम-
ग्रीमें अपनो मन चलावनो नहीं, और कदाचित् च-
लावे तो महापापी होय. ओर श्रीठाकुरजी आरोगें
नहीं ओर सिद्ध सामग्री काहुको दिखावनी नहीं.
ओर श्रीठाकुरजीकें लिये फल फुल सामग्री करी होय
तो तामें तें, स्त्री, पुत्रादिककों काहुको दिखावनो नहीं.
जो लौकिक प्रीतितें काहुको देय, ओर लेयतो बहिर्मुख
होय जाय. ओर याकों धर्म जाय. श्रीठाकुरजी अंगी-
कार न करे. तातें भगवदसेवा हे सो गोप्य हे, सो
काहुकों जतावे नहीं. जो सेवा प्रगट करि अपनी प्र-
तिष्टा बढावे ताको पाखंडी कहिये. सो ताकी सेवामें
कछु पुष्टिमार्गको फल नाहीं. ओर पाखंड करिवेवारे

के हृदेमें लौकिक आवेश आवें, सो लौकिक आवे
वहिर्मुख होय, ओर सेवामें प्रतिबंध परे. सो पाखं
मुल लोभ हे, सो जब लोभ छुटे तब पाखंड न ह
ओर लोभके लिये जगतमे पाखंड करतहे सो
पाखंडी होय ताको अन्याश्रय होय जाय, ताक
लोभके वश ते ज्ञान विवेकको फल जात रहे, सो
लोभी पाखंडीके हृदयमें श्रीठाकोरजी कबहु न बि
तातें सेवा थोरेही करे, यथा शक्ति करे, ताको
बाधक नहीं. सो थोरेही भगवदधर्मसों वाके सघरे
सिद्धि होय जाय, ओर बहुत करे ओर पाखंड स
होय तो भगवद्धर्म न बढे, तातें अलौकिक री
सेवा करे. सो श्रीठाकुरजीके जानेते कार्य होयगो
लोगन के जाने ते कुछ सिद्ध होय नहीं. और वै
वको यह धर्म हे तो उत्तम सामग्री होय सो श्रीका
जीको समर्पे, ओरअपने पास द्रव्य न होय तो म
ताप करिके कहेजो यह तो प्रभुनके लायक हे.
जहां तांई बने तहां तांई उत्तम सामग्री तथा नै
[illegible] ओर फलफुल थोरोहु बने तो अवश्य लावनों,

मेहेंगे सेंगेको विचार नाहीं करनों. श्रीठाकुरजीकुं तो स्नेह अत्यंत प्रीय हे, सो श्रीठाकुरजीको उत्तम वस्तु जहां तांइ बने तहां तांइ अंगीकार करावनों. ओर श्रीठाकुरजीको सुगंधादिक अत्यंत प्रीय हे, सो यथाशक्ति समर्पे. ओर सुगंध नित्य न बने तो उत्सवमें समर्पें. द्रव्यके अभावसों श्रुतिदेवने मृत्तिकामें पानी डारके सुगंधके भावसों प्रभुको समर्प्यों हुतो. सो एसें भावतें सघरी बात सिद्ध होय. ओर श्रीठाकुरजीको तुलसी अत्यंत प्रीय हें. सो श्रीठाकोरजीके चरणारविंदमें नित्य नेमसों विधिपूर्वक समर्पनी. ओर तुलसी समर्पती बिरियां गद्यको पाठ करनों, सो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदको संबंध श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी द्वारा भयो हे, तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीको सर्वोपर जानें. ओर तुलसी हे सो वृन्दाको स्वरूपहे. पतिव्रताहे ओर मध्य तुलसीके बीजजो हे, ताते दृढ संबंध भयो जाननो तातें तुलसी चरणोमें समर्पनो. तब जा दिन जा समय श्रीकृष्ण संबंध भयो ता समय अपने गुरुके सनमुख जो श्रीठाकुरजी हे तिनको स्वरूप अपने श्रीठाकुरजीमें

जानि समर्पै. काहेतें जो यह चरणारविंदको दृढ संबंध भयो हे. सो चरणस्पर्श करे तें प्रीति बढे. ओर प्रभुके चरणारविंदमें भक्तिहे, सो भक्तिकी वृद्धि होय. ओर या प्रकार विचारे जो कहां भक्तिरूपी चरणारविंद अलौकिक, ओर मेरो हस्त लौकिक, परंतु श्री आचार्यजी महाप्रभुजीकी कृपातें यह पदार्थ प्राप्त भयो हे. ओर प्रभु मोकों चरणस्पर्श करायो हे. तहांपुतना मोक्षमें श्रीआचार्यजी लिखेहे. जो पुतनाने सोलह हजार बालकनके प्राण लीए, सो पुतनाकों प्रभुने दुष्ट भावतें मोक्ष कीयो. ओर बालकहु भक्तभावसों श्रीठाकुरजीके हृदयमें रहे. सो श्रीठाकुरजीने यह विचारी जो सोलह हजार भक्तहें सो तिनकुं पुतना राक्षसीके संगतें आसुरावेश भयोहे सो यद्यपि जगदीश श्रीठाकुरजीके हृदयमें हे तो हु मिट्यो नहीं. तातें भक्तिरुप चरणारविंदको संबंध होय तब आसुरावेश मिटे. सो यह विचारीकें ब्रह्मांडघाटकी मृतिका खाइ, बाल चरित्र दिखाये, सो उन भक्तके अर्थ आप मुखमें माटी खाये तब ये उपरको चरित्र दिखाय व्रजके बालक तथा वेदरूप श्रीबलदेवजी इननें

श्रीयशोदाजीतें कह्यो जो श्रीठाकुरजीनें मृतिका खाइ हे. इतनी सुनिके श्रीयशोदाजी श्रीठाकुरजीके पास आइ ओर डरपायके कहे जो श्रीठाकुरजी सांची कहो जो तुमने माटी क्यों खाइ हे? तब श्रीठाकुरजी कहे जो "मैया मैंने माटी नहीं खाइ हे." सो यह लीला करी अपनी पुरुषोत्तमता बताइ, सो श्रीबलदेवजी ईश्वर हे तो हु जाने नांहि जो जोतनो प्रकार श्रीठाकुरजी जनावें तितनों जानें. तब श्रीयशोदाजीको मुख खोली ब्रह्मांड दिखायें सो यह मृतिकाको प्रसंग अत्यंत गोप्य हे. सो या प्रकार चरणामृत देकें सोलह हजार बालक पुतनाके शुद्ध किये, तापाछें वृतचर्या प्रसंगमें चीरहरण लीला करी. सो चीर देकें चीरद्वारा इनके पुंभावको स्थापन कीये. तब रासकी अखंड रात्र देखनेकी योग्यता भइ. सो अलौकिक रात्रि दिखाये. ओर वरदान दिये जो शरदमें रासलीलामें दान होयगो, काहेतें जो चरणारविंदके संबंधतें भक्ति सिद्ध भइहे. तातें चरणामृत लेनों. ओर तुलसी चरणारविंदपें समर्पनी. ओर चर्णस्पर्श करनों. या प्रकार नियम राखे, तब भक्ति बढे,

तब पुष्टिमार्गके फलकी प्राप्ति होय. ओर तुलसी हे सो जीतनो भगवद् धर्ममें प्रतिबंध हे. तीतनों सब दूर करि अलौकिक देहकी दाताहे, ओर तुलसीको अलौकिक स्वरूप हें, कहें हें जो पुष्टिमार्गमें मुख्य श्रीस्वामिनीजी विना रंचक फलकी प्राप्ति नहीं हे. सो तुलसी श्रीस्वामिनीजीके श्रीअङ्गको गंधहे. तातें श्रीठाकुरजीको अत्यंत प्रियहे सोः —॥ श्लोकः ॥ प्रियांगगंधसुरभि तुलसी चरणप्रिये। समर्पयाम्यहं देहि हरेर्देहमलौकिकम् ॥१॥ सो या भांतिसो तुलसी बडो पदार्थ हें, ओर पतिवृता पार्वती, जानकी इत्यादिकनकी आधिदैवक पतिव्रता हें. सो गोविंदस्वामि गाये हेंः—श्री अंग प्रभृति जेती जगजुवती। बार फेरि डारो तेरे रूप पर ॥१॥ या प्रकार अलौकिक भाव जानी तुलसी समर्पे. ओर वृन्दा रूप तो मर्यादा मार्गकी रीतिसों सब जगतमें दिखायेहें. ओर जा दिन श्रीठाकुरजीकी सेवा चरणस्पर्श न बने, ता दिनको जाननों जो आज दिन मिथ्या गयो. सो यह भाव अत्यंत दुर्लभ हे, ओर दासभाव राखिके प्रभुकी टहेल करनी तातें प्रभु प्रसन्न होय.

ओर स्नेह तो अत्यंत दुर्लभ हे. ओर स्नेह विना स-
घरी क्रिया वृथा जाननी. एसो स्नेह बडो पदार्थ हे;
सो या प्रकारसों भगवद् सेवाको नियम, अपने पुष्टि
मार्गकों धर्म भगवदीयसों मिलिकें पालनों. ओर भ-
गवद् धर्मतें श्रीठाकुरजीमें स्नेह होय. ओर दुःसंगमें
अपनों धर्म जायवेमें भय होय, ओर सत्संगते सदा
भक्ति होय, ओर धर्म गयो तब सब पापरुपक भयो.
तातें भगवदीयतें प्रीति सहित मिलाप राखें. तातें.
याको कल्याण होय. या प्रकार श्री गोकुलनाथजी
कल्याणभट्ट प्रति वैष्णवनकों शिक्षा दिये हे.

इति श्रीगोकुलनाथजीकृत बावीसमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत २३ मो

अब ओर हु श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति
कहतहें:—जो वैष्णवको सखडी, अनसखडीको विचार
राखनों ओर न समजत होय तो पुष्टिमार्गीय भग-
वदीयसों रीति भांति पुछनी, ओर वैष्णवको साम-
ग्रीमें ओर महाप्रसादमें विचार राखनों. जो सामग्रीमें
श्रीठाकुरजीकी सत्ता जाननी, महाप्रसादमें वैष्णवकी

ओर भगवद् मंदिर में आपुकों जानोंपरे, तब ग्लानि आवे, तातें फटे मोटेकी कछु चिंता नही. अपने देहके अर्थ जेसो बने तेसो पहेरे, परंतु बहु मेलो न राखे ओर अपनें देहके अर्थ काहुके दिखायवेके अर्थ आछो कपडा नाही पहरे, यह दासको धर्म हे. ओर सुकर, शयाळ, गर्दभ, कुत्ता, धोबी, नीचजाति, चांडाल, भंगी, चमार, आसुरी, सुतकी, रजस्वला, छापकी, (गरोळी) सर्प, इत्यादिकनकों छुवे तो तत्काळ न्हाय डारे. ओर छीवेके स्पर्शतें दिनको छुयो दिनमेंही न्हाय, रात्रकों छुयो रात्र में न्हाय. यह वेद स्मृति शास्त्र में कह्यो हे. ओर महाप्रसाद उत्तम ठोरको लेय. या प्रकार आचार विचार सु रहे. ओर या प्रकार पुष्टिमार्ग की रीतिमें न समझे तो भगवदीय वैष्णवतें पुछयों चाहिये. ओर उत्सवादिक को लोप न करनों. क्यों के. जब उत्सव आवत हें. तब श्री ठाकुरजीकों परम आनंद होत हे. सो जबलों उत्सव आवत हे. ओर श्रीठाकुरजीकों उत्सव न करावे. तो श्री ठाकुरजी अप्रसन्न होय जाय, तातें उत्सव यथाशक्ति सर्वथा करनों. सो [illegible]

करनों. ओर मनमें दुःख पायकें न करनों, ओर का-
हुके आगे अपनी बडाइ न करनी. जो मेंने उत्सव
कियो ओर लौकिक वैदिक कार्य आय पडे तोहु उत्सव
टारनों नहीं. अपने ओर कार्य आय पडे तो वैष्णवके घर
तथा अपने घर वैष्णव पास करावे. सो लौकिक कार्य
अर्थ अलौकिक श्रीठाकुरजीको उत्सव टारे तो श्रीठा-
कुरजी कुढे. ओर जीवके उपर अप्रसन्न होय. तातें
अलौकिक कार्यमें मन राखे, ओर लौकिक वैदिक
आवश्यक होय सो करे, ओर पुत्रादिकको व्याह करे,
तब मर्यादी होय तहां तिनके घर पुष्टिमार्गकी रीति
सों महाप्रसाद् ले ओर अन्य मार्गकी रीति होयतो
महाप्रसाद् न लेनो. ओर लौकिक कार्य करनों होय,
तो श्रीठाकुरजीको वस्त्र, सामग्री पहले करनी. ओर
लौकिकको कार्य पाछें करनों, ओर नात जिमामनी
होय तो प्रथम श्रीठाकुरजीकी सामग्री करे, पाछें श्री
ठाकुरजीको भोग धरे, तापाछें वैष्णवको लिवावे. ओर
वैष्णवको लिवाये पाछें श्रीनाथजी की तथा गुरुनकी
यथाशक्ति भेट काढें. ओर श्राद्धादिकमें वैष्णवकों न

लिवावें. ओर सदा जाके घर लेत होय सोता भांतिसो लिवावें. ओर लौकिक भावते ब्राह्मण ओर जातिको लिवावें. ओर अलौकिक कार्यमें वैष्णवको करे, तहां ओरके करेको प्रयोजन नहीं, ओर लौकिकमें कोइ जातिको बुरो माने तो वाकों प्रसाद देकें प्रसन्न करे, तातें अपने मार्गकी निंदा न करावे, सो काहेतें जो सुदृढ भक्ति भइ नाहीं हे, तातें अपने मनमें निंदाते दुःख होय. दृढ भक्ति वारेकों तो कछु लौकिक वैदिक सो-होय नहीं. वाको तो केवळ अलौकिकहीते काम हे, या प्रकारसों रहेनों, ओर जहां तांइ भक्ति दृढ नहीं भइ हे तहां तांइ यह जाने जो मेरी भक्ति में कोइ प्रतिबंध न करे, ओर लौकिक वैदिक करे तातें श्री-ठाकुरजीकी सेवा निर्विघ्नतासें करे. ओर मनमें खेद होय सो न करे. ओर पुष्टिमार्गीयसों कोइ वातको अंतराय न राखे. ओर कपट छल भगवदीयसों न राखें. ओर लौकिक वैदिक कार्य हीन जानें, सो यह पुष्टिमार्गकी रीति सर्वोपर जानें. ओर इन इन्द्रियनके विषयादिकनतें श्री ठाकुरजीको आवेश जातो रहे.

ओर कहेहें " विषयाक्रांतदेहानां नावेशः सर्वथा हरेः"
सो या प्रकार करिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहेहें,
सो सेवा बराबर धर्म नहीं सो बहुत वैष्णवकों कठिन हे.
ओर वैष्णवको विवेक विचारसों सर्व कार्य करनों. देश
काल समयको विचार राखनो. बुरेकी निकट न जानो.
ओर वासु संभाषणहु न करनों. सेवा बने सो उत्तम
काल जाननो. ओर ब्रज भुमि उत्तमते उत्तम भुमि
जाननो, जो जहां श्रीपुरुषोत्तमकी नित्यलीला स्थिति
हे. ओर रात्रकों शयन करनो तब प्रातःकालकी सेवा
को स्मरण करनों. ओर श्रीठाकुरजीके श्रीमहाप्रभुजीके
कीर्तन करि सोवनो, ओर कीर्तन न आवे तो, श्रीमहा-
प्रभुजीको, श्रीगुसांइजीको तथा गुरुनको स्मरण करिके
सोवनो. सो सबनके नामतें सघरो दिन खोटो खरो
बोल्यो होय तो सब सुस्वरूप होय जाय. जेसे रात्रको
दूध लियेतें अगरे दिनको प्रसाद दूधवत् गुन करे. सोवत
समय चरणामृत ले के सोवे तो वाकों दुःस्वप्न नहीं
आवे. ओर निंद तो मृतक बराबरहे, तातें श्वास आवे
तथा नहीं आवे, तातें चरणामृतकों सबंध मुखमें बन्यो

है, तो सर्वथा दुरगति न पावें. या प्रकारसों वैष्णव या कालमें सावधान होयकें रहे तब बचे. या प्रकार श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभट्ट प्रति कहे हैं.

इतिश्री गोकुलनाथजीकृत तेवीशमो वचनामृत संपूर्णम्.

वचनामृत २४ मो.

अब श्रीगोकुलनाथजी चोवीशमो वचनामृत कहत हैं, जो वैष्णवकों यह भय राखनो. जो मेरी भगवत् सेवामें अंतराय न होय, यह भाव राखनों, ओर सेवाके अर्थ लौकिक कुटुम्बको, परोसी तथा राजा देश कालको सघरो दुःख सहनों, ओर जाननो जो यह दुःख है सो तो देह संबंधी है. सो कोइ कहा करेगो. ओर भगवत् सेवा मोकुं चाहिये, ओर दुःख सुख तो जगतमें जहां जायगो तहां याको सिद्धि है परंतु भगवत् सेवा तो बहुत दुर्लभ है. जब प्रभु अत्यंत कृपा करे तब भगवदी ओर सेवाको संयोग बने. ओर अपने मनमें यह जाने जो जहां तांइ यह देहहे तहां तांई यह दुःख है. ओर लौकिक दुःख सुख मेरे संग नाहीं है. तातें दुःख, सुख पायके सहन करे. ओर कहें जो यह सेवा

मेरे जन्म जन्मको कल्याण करताहे. तातें या जन्ममें दुःख भयो तो कहा ! परंतु सेवा तो बनत हे, ओर लौकिकवैदिकके लिये आपुन देशदेशनमें कितनों दुःख सहतहें. सो तो तुच्छ पदार्थ हे. ओर यहां अलौकिक भगवत् सेवा हे, ताके अर्थ जो दुःख पावें तो आनंद पायकें सहनों. ओर भगवत् सेवा मन लगायके करनों. ओर श्रीठाकुरजीकी सामग्री तथा नेग बांधे, सो नेग रंचकहु घटावे नहीं, तातें अपनी सामर्थ्य देखिके नेग बांधे. ओर नेग बांधे पाछे न करे तो प्रभु नेग विना दुःख पावे. यह भक्ति मार्गमें नेगकी प्रभु आशा करतहे, सो लौकिक दृष्टांततें जाननों, जेसें कोइ वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावे, सो वाको एक दिन घटतो धरें तो वह भुखे रहें, ता भावतें विचारिकें नेक बांधनो. ओर जो कोइ वैष्णव सेवामें चतुर होय तो वाको सेवामें राखनों ओर काहुकों सामग्री आछी आवें, कोइ बीडी आछो बांधी जाने, कोइ सुंदर माला गुंथी जाने. ओर कोइ सुगन्ध, अत्तर, फुलेल. अगरजा, चोवा ओर रीति भांति जाने वाको सेवा में राखे. ओर कोइ

कुल्हे, टीपारो, वस्त्रनमें बांध जाने तो तिनसों करावे. सो या प्रकारसों प्रीतिपूर्वक सेवा करे. ओर जामें गुण बहुत होय ओर प्रीति रंचहु न राखे; तासुं कछु न करावे. ओर थोरो गुण होय, प्रीति तें करे, तासों सेवा करावे. अपनेको कछु गुण आवत होय, ओर कोइ वैष्णव श्रद्धापूर्वक पूछे तो कहें परंतु आपतें ठोरठोर न कहत डोले. ओर अपने गुनको अभिमान न करे, प्रीति पूर्वक वैष्णव को बतावनो, ओर आपतें नयो होय तो वाको आछो जाननो, ओर आपुनतें प्रथम हुए वैष्णवकी कानी राखनी. ओर जाने जो ये वैष्णव हे, ओर मोतें बडो बडभागी हे, ओर प्रभुनने इनकों बालपणे ते अंगीकार कियो हे. ओर भगवद्धर्म में छोटो बडो न जाने, कृपाकुं देखें. ओर काहुको शरण आवतही आछी दिशा होत हें. ओर काहुकों जन्म व्यतित होय जाय, तोहु कछु न समजे तातें या मार्गमें बडे छोटे को प्रमान नाहीं. जो या मार्ग में तो कृपाहीं को विचार हे. ओर पुष्टिमार्गमें शरण आवे ताको सुजाति जाननो, ओर तें अपनो धर्म गोप्य

राखनो, ओर जो वस्तु पुष्टिमार्गमें अंगीकार कीनी हे, ताहीको समर्पे, सोइ महाप्रसाद लेय. ओर तरबुजा, मुला, गाजर इत्यादिक निषिद्धहें, ओर वेदमेंहु वर्जित हे, तातें कबहु न लेय. ओर शास्त्रमें वेंगनहुं निषिद्ध हें, परंतु या पुष्टिमार्गमें श्री जगन्नाथजी की आज्ञा तें लीने हें. ताते वेगन धरिके लेय, ओर लोन डागे शाककुं, ओर खीरकुं शास्त्रमें सखडीमें कह्यो हे ताको अनसखडी की रीतिसों करे. शाकादीक में अग्नितें उतारि के पाछे लोंन डार्यों चाहिये. थोरो बने तो चिंता नहीं. परंतु पुष्टिमार्ग की रीतिसों करनो. पुष्टिमार्गकी रीत बहुत बडी हे. दुसरेके मार्गकी क्रियासों कछु फल नाही हे. सो श्रीगीताजीमें कहे हे. ॥

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो: भयावहः"

सो परायो धर्म भय उपजावे हे. तातें कछु कार्य न होय. ओर अपने पुष्टिमार्गमें रीति प्रमान करे भले थोरीही करें, ओर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीको आश्रय करे तो वा धर्म ते प्रभु प्रसन्न होय. उत्साहसों बने सो करे. काहुकी लौकिक प्रतिष्ठा देखीके वाकी बराबरी न

करें. तब वामें श्री आचार्यजीकी कानितें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय. ओर प्रभु प्रसन्न न होय तब याको कियो कहा ? ताते प्रभुनको तो एक मनहीकी अपेक्षा हे ओर श्रीठाकुरजीके तो कोई बातकी घटती नाहीं. वैष्णवको जेसो भाव होय तेसो अंगीकार करें. तेसोइ दान करे. तातें वैष्णव अपनी योग्यता छोडी श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकों आश्रय करें. ओर लौकिक वैदिकमें लोक निष्ठा दिखाय अपनों धर्म गोप्य राखें, तहां लौकिक व्योहार बने तो करे जानों. तामें जो भगवद् इच्छातें आय प्राप्त होय तामे ते श्रीनाथजीको अंश प्रथम काढिये. तापाछें गुरूनको काढिये. दोउ थेली न्यारी करिके धरत जैये तथा गाममें कोइ वैष्णवके पास धरत जैये. अपने घर द्रव्यको कबहु न धरिये, जो कहाजाने कोइ समय केसी कठिनता आय पडे, तो छिनमें धर्म छुटि जाय. यह द्रव्य कोइ समय भगवतधर्मको नाश करे, सो गाममें कोइ प्रमाणिक वैष्णव होय ताके घर धरत जैये. जब श्रीजीको मेटीया आवे तब तत्काल दे देय. यह न जानें जो मेंही जाउंगो.

ओर गाममें गुरु होय तो भेटकादि भेटकरी आवे, ओर दुसरे गाममें होयतो हुंडी करिके पठावे. ओर कोइ वैष्णव भरोंसेको होय तो वाके हाथ पठावे. सो काहेतें जो या कालमें द्रव्य ओर परस्त्री ए भगवद्धर्मको नाश कर्ता हे. सो श्रीभागवतमेंहु कह्यो हे, जो काष्टकी पुतरीको संग न करनों. क्योंकि चित्र लिखी पुतरीको देखेतें मनमें विकार होतहे. तातें परा स्त्रीको सर्वथा त्याग करनों. ओर वाको कालरूप जाननो. ओर श्री गोवर्धननाथजीके तथा अपने गुरुनके दर्शनकी सदा सर्वदा आरति राखनों. ओर यह न जाननो जो में दोय चारि वेर होय आयो हुं. सो ज्यों ज्यों दर्शन करे त्यों त्यों अधिक ताप करनों. जाने जो दर्शन करवेको फल कृपा करिके दीनोहे. ओर याही भांति श्रीयमुनाजीके जल पानको हु ताप राखनो, ओर श्रीगोवर्धननाथजीके टहेलवा व्रजमें रहत हें, तिनसों दोषभाव न राखनो. जो काहेतें, कि वैदिक शास्त्रमें कहेहें, जो या जगत श्रीठाकुरजीको क्रीडाभांडहें, सो सघरो जगत काष्टकी पुतरीवत हें, सो प्रभु

उनको नचावतहे, तेसे नाचतहे, तातें काहुको दोष न देखें. ओर आछी वात होय सो समुझावे. ओर न समझत होय तो भगवद् इच्छा जाने, तातें दोष बुद्धि न राखे. क्यों जो वे व्रज संबंधी हे, सो प्रभु विचारे विना प्रभुके गाममें प्रभुके पास केसे रहें? तातें उनको अलौकिक करि जानें, उनकी सेवा टहेल बने सो करें. ओर आप उत्तम स्थलमें अपराधको भय राखे, ओर ठोरके अपराध तो उत्तम स्थलमें गये ते छुटें, ओर उत्तम स्थलको पाप वज्रलेप होय जाय, सो केसें छुटे, तातें अपराधको सर्वथा भय राखें, सो उत्तम स्थलको भय राखकें खोटी बात न करें. ओर काननतें सुनेहु नाहीं. तब भाव दृढ होय. तब प्रभु प्रसन्न होय. ओर श्रीभागवतके एक दोय अध्यायको पाठ नित्य करनो. और एतन्मार्गके ग्रंथनकी टीकाको श्रवण करे विना प्रभुनमे मन लागे नाहीं, सो काहेते जो ग्रंथन विना पुष्टिमार्गके सिद्धांतको न जाने. और वैष्णवनके मुखते सुने तब श्री आचार्यजी तथा श्रीगुसांइजीके पुष्टिमार्गको सिद्धांत सेवा क्रियाको संपूर्ण अलौकिक

ज्ञान होय तब प्रीति वढे. ओर जब प्रीति उपजी तब याको संपूर्ण कार्य सिद्ध भयो. ओर श्रीसुबोधिनीजी श्रीवल्लभकुल वांचे सो सुने, तथा नीवेदनीके मुखतें सुने. सो लीलाको भाव अपने हृदेमें शुद्ध करिके राखे, काहतें जो भगवदमाहात्म्य जाने विना प्रीति न होय, ओर सुने विना ज्ञान न होय. तातें भगवद्वार्ता श्रवण अवश्य करे, सो श्री आचार्यजी महाप्रभुजी नवरत्नमें कहे हें, जो हम निवेदन कियेहें, परंतु भगवदीयके संग विना, श्रवण किये विना, ज्ञान न भयो तो प्रीति न होय, तो प्रभु प्रसन्न न होय. जेसे जगतमें द्रव्यको ज्ञानहे, तातें द्रव्यमें प्रीति हे, काहेते जो द्रव्यके गुणके ज्ञानते संसारमे सर्व ज्ञान होतहे, सो याही ते होत हे, तेसेइ प्रभुनके गुण गानते प्रभुनको ज्ञान होय, सो सर्वोपर जानि प्रीति होय, ताते संपूर्ण अलौकिक कार्य सिद्धि होय, ओर एतन्मार्गके अष्टछापके कीर्तन गावे तथा सुनवेमे प्रीति राखे, सो काहेते जो पुष्टिलीलाके दर्शन अष्टछापमें हे. ओर अन्य मार्गके कीर्तन जुग जुगमें अंश कलातें कृष्ण

प्रगट होतेहे, तिनके हे, तातें यह जानके अन्यमार्गीय के कीर्तन न सुनें. अपने श्रीठाकुरजीकी लीला के नहींहे यह जानी के कोइ अन्यमार्गी एतन्मार्गके कीर्तन अष्टछापके गावें तिनको हू न सुनें. ओर जेसे जमुना जल ओरके पात्रमें होय तो पुष्टिमार्गीय केसें पीवें? जो पीवे तो भ्रष्ट होय जाय. तेसेंय अष्टछापके कीर्तन वैष्णवके मुखते सुने. ओर श्रीठाकुरजीकी सेवा तथा दर्शन करिकें निकसें तबपीठ फेरिकें बाहिर ननिकसें, क्यों जो अराध पडे हे तासो दंडवत् करें, ता पाछें ओर ठोर जाय. तब अपराध निवारण होय, ओर श्रीठाकुरजीके सनमुख दंडवत् करे परंतु श्रीठाकोरजीके पीठ पाछें दंडवत् न करे. तहां बेठेंहु नहीं, सो काहेतें जो श्रीठाकुरजीके पीठ पाछें बहिरमुखताहे, सो याकों होय. सो दामोदर लीलाके प्रसंगमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहे हे, जो श्रीयशोदाजी श्रीठाकुरजीको पकरनको आइ तब श्रीठाकुरजी भाजे; ज्यों ज्यों पीठ दीठी, तब तब क्रोध बढ्य . ओर स्नेह छुट्यो. तब श्रीठाकुरजी बंधे. तातें प्रभुनके सनमुख बेठनों. ओर अपनें गुरुनको स्वरुप

देमे राखि दंडोत करि विज्ञप्ति करे, जो महा-
संसार समुद्रमे बुडत हो तातें आप बांह पकरी
तो निकसी आउं. ओर मेरीं सामर्थ्ये तो
की नाहीं हे. सो में आपकी शरन हो आपकी
ोरहुं. ओर साधन करिकें हिनहुं, तातें आ-
। विना, आश्रय विना, ओर उपाय नहीं
सें पतितको कृपा करिके उद्धार करिवेवारे
ो. सो आप कृपा करोगे, तब प्रभु प्रसन्न
र श्रीठाकुरजी अपने घरमें बिराजे हे. ति-
व प्रभुभाव दोउ राखे, ओर मुखारविंदरूप
जी महाप्रभुजीहें, या भावतें पुष्टिमार्गमें
्य हे. सो लौकिक दृष्टांततें कहतहें, जो एक
. एक भाव संबंधीहे. अपनी बेटी हे सो देह
ोर वहुहे सो भावसंबंधी, अपनी बेटी अपने
ी हें, परंतु पराये घर जाय, ओर पाली
अपनी घरकी नांही हे. ओर वहु, काहुकी
भाव संबंधते घरमें आइ, ओर मालिकनी
ं ज्यांहां भावसंबंध हे, सो दृढ हे. जेसे

देह संबंधी यादव तीनको क्षय भयो, ओर भाव संबंधी जे व्रजभक्त तिनको अपनपौं दीयो तेसेइ श्रीआचार्यजी पुष्टिमार्ग प्रगट करिकें जिवनकुं ब्रह्मसंबंध कराये, ओर भाव संबंध दृढ करि दीयों. सो एसो दान भयो हे परंतु पतिवृत्त धर्ममें चले, तो प्रभु प्रसन्न होय. तेसइ वैष्णव साक्षात् श्री पूर्णपुरुषोत्तमको अपनें पति जानें, ओर इनहीके सेवा स्मरणमें तन, मन, धन समर्पन करे तो प्रभु प्रसन्न होय. सो या प्रकार कृपा करिके श्रीगोकुलनाथजी आप कल्याण भट्टसे कहे हें. ओर पाछें यह आज्ञा कीयेहें, जो यह पुष्टिमार्गको सिद्धांत अत्यंत गोप्यहे. सो काहुके आगे मति कहियो, ओर केवल अनन्य भगवदिय होय, तासों कहियो. यह हमारी शिक्षाहे. सो तुम जानोगे.

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत चोवीसमो वचनामृत संपूर्णम्

 समाप्त.

श्री हरिरायजीनां ८४ बोध वचन.

वैष्णवोए श्री हरिरायजीनां आ बोधवचनने हृदयमां धारण करवां अने ते प्रमाणे अनुकरण करवुं.

※

१ भगवदी वैष्णवोए हंमेशां मनमां प्रसन्न रहेवूं, अमंगल उदासीनमां न रहेवूं. २ श्री ठाकोरजीना मंदिरमां नित्य नौतम उत्सव जाणवो. ३ श्री ठाकोरजीनी सेवा कोइने भरोंसे न मूकवी, आपणे माथे जे सेवानुं स्वरुप विराजतुं होय, तेनी सेवा आपणे ज करवी जोइए. ४ कोइनो विरोध न करवो, सर्वेनी साथे मीठां वचन बोलवां. ५ विषय अने तृष्णानो त्याग करवो. ६ प्रभुनी सेवा भय अने स्नेह राखी करवी. आपणो देह अनित्य करी जाणवो. ८ वैष्णवना सत्संगमां रहेवूं. भगवद स्वरुप अने भगवदीय वैष्णवने मित्र करी समजवा. १० आपणी बुद्धि स्थिर करी राखवी, बुद्धिने चलायमान न करवी. ११ भगवत् दर्शनमां आळस न करवी. १२ भगवत् दर्शनमां आळस करे तो आसुरी भाव उत्पन्न थाय. १३ प्रसाद थोडो लेवो जेथी आळस न थाय. १४ निंद्रा थोडी करवी. १५ भगवदीनी पासे आपणे चालीने जावूं. १६ कोइना उपर क्रोध नही करवो, क्रोध करवाथी हृदयमांथी भगवदावेश जतो रहे छे. १७ ज्यां स्वधर्म विरुद्ध चर्चा चालती होय त्यां मौन रहेवूं. १८ अवैष्णवोनो संग न करवो. १९ सेवामां अवैष्णवने लाववा नहि, यथाशक्य भगवदीयनी सेवा करवी. २० धैर्यता धारण करवी.

२१ मन श्री ठाकोरजीनां चरणारविंदमां राखी संसारनुं काम करतां रहेवुं. २२ भगवदी साथे नौतम भाव राखी रहेवुं. २३ सेवामां बकवाद न करवो. (बोलवुं नहीं) २४ प्रसन्नताथी सेवा करवी. २५ सेवा करी श्रीठाकोरजीनी पासे कोइ पण वस्तु न मागवी. २६ श्री ठाकोरजीनुं नाम लईने कांइपण वस्तु लावीए ते श्री ठाकोरजीने प्रथम धरीए त्यार पछी पोते खानपान करवुं. २७ मनमां भगवदीय साथे दासभाव राखवो. २८ भगवदीथी द्वेष भाव न राखवो. २९ श्री ठाकोरजीना उत्सवनो लोप न करवो. ३० भगवदीनुं स्मरण करीए (८४, २५२ वैष्णवोनी वार्ता वांचीए) ३१ मार्गनी रीति प्रमाणे सेवा करवी. ३२ भगवदी वैष्णवनां छल छीद्र न जोवां. ३३ नवीन वस्तु सामग्री सौथी प्रथम श्री ठाकोर-जीने अवश्य धरवी. ३४ प्रीय वस्तु मळे तो हर्ष न करवो. ३५ कंइ पण वस्तुनुं नुकशान थाय त्यारे दीलने शोक करवो नहीं. (गतं न शोचामि) ३६ सुख दुःख सरखां करी मानवां. ३७ भगवद् वार्ता नित्य नियमथी करवी. ३८ श्री सर्वोत्तमजीनो पाठ नित्य नियमथी करीए ए पुष्टिमार्गीय वैष्णवनी गायत्री छे. ३९ श्रीयमुनाष्टक आदि ग्रंथोनो पाठ नित्य नेमथी करवो. ४० जयंतीव्रत अने एकादशीव्रत अवश्य करवां. ४१ पाक सामग्री पवित्रताथी करवी. ४२ असमर्पित वस्तु कांइ पण न लेवो. ४३ मन उदार राखवुं. ४३ सर्वथी मीत्रताइ करवी. ४५ स्वधर्मार्थे तन, मन अने धनथी मदद करवी. ४६ अहंता ममता छोडी देवी. ४७ क्षमावंत थइने रहेवुं. ४८ जे कंइ प्राप्ति थाय तेमां संतोष मानवो. ४९ बाहीर भीतर शुद्धताथी रहेवुं. आळस रहीत रहेवुं.

५१ कोइनोपक्षपात न करवो(न्यायी थवुं).५२ सर्व भोगादिकनो त्याग करवो. ५३ मनमां कोइ वातनी इच्छा न करवी. ५४ सहेजमां जे कांइ प्राप्ति थाय तेमां आपणुं कार्य करवुं. ५५ कोइ वस्तुमां आसक्त न थवुं. ५६ शत्रु मित्र विषे समान बुद्धि राखवी. ५७ असत्य बोलवुं नहि. ५८ कोइनुं अपमान न करवुं. ५९ निंदा स्तुति समान करी मानवी. ६० स्थिरता राखवी. चित्त आपणे वश राखवुं. ६१ इन्द्रीओने विषे प्रिती न राखवी. ६२ स्त्री पुत्र ग्रहना उपर प्रीती न करवी. ६३ स्त्री पुत्रादिकनुं सुख दुःख आपणा विषे मानी लेवुं नहि. ६४ मनमां कोइ वातनो गर्व करवो नहीं. ६५ कुटीलता रहित रहेवुं. ६६ मिथ्या भाषण न करवुं.६७ सत्य बोलवुं.६८ शांत चित्त राखवुं. ६९ प्राणी मात्र उपर दया राखवी. ७० एकाग्र चित्तथी सेवा करवी. ७१ अंतःकरण कोमल राखवुं. ७२ निंदित कार्य कोइ दिवस न करवुं. ७३ क्षमावंत थइने रहेवुं. ७४ महापुरुषोनां चरित्रो वांचवां. ७५ पोताना मनमां अभिमान न करवुं, ७६ बीजाना मनने दुःख थाय एवुं कोइ पण वचन बोलवुं नहि.७७ सत्य होय ने सांभळनारने प्रीय लागे तेवुं वचन कहेवुं. ७८ पुरुषोत्तम सहस्र नाम तथा श्रीवल्लभाचार्यजी कृत ग्रंथनो पाठ अवश्य करवो. ७९ जे कांइ करवुं तेनुं फल मनमां न इच्छवुं. ८० श्रीठाकोरजीनी सेवा. कीर्तन छे तेज परम फल रुप छे एम मानवुं. ८१ वैष्णव मंडळीमां नित्य नेमथी जावुं, कथा वार्ता निःशंक थइने कहीए तथा सांभळीए. ८२ अन्याश्रय कदी पण न करवो. अन्याश्रय बहुज बाधक छे, तेथी अन्याश्रयथी बीहता रहेवुं. ८३ श्रीठाकोरजीने शरणागत रहेवुं. बीजा देवताथी कोइ पण जातनुं फल इच्छवुं नहि.

:४ श्री आचार्यजी महाप्रभुजी तथा श्रीगुसांइजी तथा तेमना वंश-
ोनी समान अन्य कोइने न जाणवा; ने एमना समान बीजाने
जाणे तो आसुरावेश थाय. अने जीवनो उद्धार थाय नहि, एमां
संदेह नहि.

उपर प्रमाणे श्रीहरिरायजीना वचनामृतनुं अनुकरण करवाथी प्राणीमात्र भक्तिमान थइ श्री प्रभु-चरणारविंदने पामे छे.

❋

श्रीगोकुलेशजीकी कृपाते श्रीहरिरायजीका प्राकट्य हुआहे इसलीये श्रीहरिरायजीने श्रीगोकुलेशजीके १०८ नामकी नामावली लीखी हे ।

॥ श्रीगोकुलेशाष्टोत्तरशत नामावलिः ॥

श्री गोकुलेश मत्स्वामिन् नामानि तव तुष्टये
कथये तव दासानां सर्वकामफलप्रद ॥ १ ॥

❋

१ श्रीगोकुलेशाय नमः । २ श्रीरुक्मिणीनन्दना नमः ।
३ श्रीगिरिधरप्रियाय नमः । ४ श्रीगोविंदमनोरञ्जनाय नमः ।
५ श्रीबालकृष्णानुजाय नमः । ५ श्रीगोकुलनाथाय नमः ।
७ श्रीरघुनाथाग्रजाय नमः । ८ श्रीयदुनाथप्रीतिकर्त्रे नमः ।
९ श्रीघनश्यामपोषकाय नमः । १० श्रीपार्वतीप्राणपतये नमः ।
११ श्रीविट्ठलरायजनकाय नमः । १२ श्रीगोवर्द्धनेशलालितायनमः ।

१३ श्रीव्रजपति'लाड'कर्त्रे नमः। १४ श्रीधर्मस्थापकाय नमः ।
१५ श्रीगोकुलपतये नमः । १६ गोवर्धनगमनोत्सुकाय नमः।
१७ गिरिवरनमनकर्त्रे नमः। १८ अतिप्रसन्नमुखारविंदाय नमः।
१९ भक्तनयनाह्लादकाय नमः। २० भक्तमनोरथपूरकाय नमः।
२१ श्रीगोकुलागताय नमः । २२ स्वप्रभुनमनकर्त्रे नमः।
२३ भक्तप्रियाय नमः। २४ आचार्यनामार्थप्रकटीकरणाय नमः।
३५ पितामहचरणासक्तये नमः। २६ पितामहस्वरूपज्ञापकाय नमः।
२७ पितृपादसरोजनम्राय नमः ।
२८ पितृदत्ततुसीमालाधारकाय नमः ।
२९ उर्ध्वपुण्ड्रधारकाय नमः। ३० षण्णवतिमुद्रांकितविग्रहाय नमः।
३१ भव्यमूर्तये नमः । ३२ आकर्णनेत्राय नमः ।
३३ कर्णशोभितकुण्डलधारकाय नमः।
३४ श्रीहस्तेजटितकंकणधारकाय नमः।
३५ अङ्गुलीषु सुमणिजटितमुद्रिकाधारिणे नमः ।
३६ श्रीकण्ठे मुक्तामालाराजिताय नमः ।
३७ कृष्णदास्यप्रियाय नमः । ३८ निजजन्मोत्सवकर्त्रे नमः ।
३९ स्वजनहितमङ्गलाचरिताय नमः। ४० व्रजमङ्गलाचरिताय नमः।
४१ व्रजमङ्गलदायकाय नमः। ४२ पूर्वोक्तस्टष्टिपूजादिकर्त्रे नमः ।
४३ महोदाराय नमः । ४४ सकलद्विजदक्षिणादात्रे नमः ।
४५ निजजनहृदयानन्दाविर्भावकर्त्रे नमः ।
४६ नीराजनवारितभक्तनिरीक्षकाय नमः ।
४७ ताम्बुलदात्रे नमः । ४८ हृष्टमानसाय नमः ।
४९ आचार्यसिद्धान्तव्याख्यानकर्त्रे नमः ।

५० स्वमतस्थापकाय नमः। ५१ भागवतार्थाचरिताय नमः।
५२ पितुराज्ञया यमुनाष्टकशेषव्यारव्यानकर्त्रे नमः।
५३ पितृवाक्परिपालकाय नमः। ५४ शान्तमूर्त्तये नमः।
५५ महाकारुणिकाय नमः। ५६ निजजनोपरिकृपादृष्टिकर्त्रे नमः।
५७ अत्युदाराय नमः। ५८ याचकजनमनोरथपूरकाय नमः।
५९ गोकुलनाथाय नमः। ६० गोवल्लभाय नमः।
६१ गोवर्धनेशप्रियाय नमः। ६२ श्रीमद्वल्लभकुलमण्डनाय नमः।
६३ गोस्वामिने नमः। ६४ वाक्सुधावृष्टिकर्त्रे नमः।
६५ चर्विततताम्बुलभक्तदात्रे नमः। ६६ सकलभूषणभूषिताय नमः।
६७ मनोहररूपाय नमः। ६८ निजजनप्राणवल्लभाय नमः।
६९ अग्निहोत्रादिकर्मकर्त्रे नमः। ७० त्रिवारं सन्ध्यावन्दिने नमः।
७१ कर्ममार्गप्रवर्त्तकाय नमः। ७२ भक्तिमार्गतात्पर्याय नमः।
७३ 'ठकुरानीघाटे' स्नान-कर्त्रे नमः।
७५ निजमन्दिरगताय नमः। ७६ भगवद्गुणगानश्रवणकर्त्रे नमः।
७७ 'सारङ्गी'वाद्यप्रियाय नमः। ७८ नीराजनवारिणे नमः।
७९ 'चिद्रूप'मतखण्डनाय नमः। ८० मालादृढस्थापकाय नमः।
८१ पृथ्वीशाज्ञोल्लङ्घनाय नमः। ८२ तत्समीपे काश्मीरगताय नमः।
८३ काश्मीरपावनकर्त्रे नमः।
८४ तदाज्ञया 'सोरम'वासनिर्धारकर्त्रे नमः।
८५ पुनर्गोकुलगताय नमः।
८६ सपरिवारं वाराहक्षेत्रे गङ्गासमीपे गताय नमः।
८७ स्वभ्रातुरासुरव्यामोहं श्रुत्वा गोकुलागताय नमः।

८८ दामोदरादिसमाधानकर्त्रे नमः ।

८९ नवनीतप्रियमन्दिरगताय नमः ।

९० साष्टाङ्गदण्डवत्प्रणामकर्त्रे नमः ।

९१ प्रभुचरणेतुलसीदलस्थापकाय नमः ।

९२ पितामहपितृसमीपे भ्रातृपादुका स्थापकाय नमः ।

९३ गूढभावप्रकटीकर्त्रे नमः । ९४ महानुभावाय नमः ।

९५ पुनः 'सोरम'पादधारिणे नमः ।

९६ किञ्चित्कालं तत्र निवासकर्त्रे नमः ।

९७ सकुटुम्बं त्वरितगोकुलगताय नमः ।

९८ यमुनास्नानकर्त्रे नमः । ९९ गोदानकर्त्रे नमः ।

१०० यमुनारसभोगकर्त्रे नमः । १०१ आनंदपूरिताय नमः ।

१०२ आबालवृद्धं तुलसीमाला तिलक धारिणे नमः ।

१०३ नित्यं श्रीगोकुलस्थानविराजिताय नमः ।

१०४ पुष्टिमार्गभावभावनैकदक्षाय नमः ।

१०५ ज्ञानगूढहृदयाय नमः । १०६ हसद्वदनपङ्कजाय नमः ।

१०७ मनोजमधुराकृतये नमः । १०८ ताताज्ञैकपालनतत्पराय नमः ।

इति श्रीगोकुलाधीशनाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
सर्वदा चिन्तनीयं हि सर्व चिन्ता निवृत्तये ॥१॥

इति श्रीमद्दासानुदासहरिदासविरचिता श्री गोकुलेशाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ समाप्त ॥

શ્રીમહાઓચ્છવનાં ઘોળ

પદ ૧ લું

શ્રીવલ્લભ પ્રકટે ભાગ્ય હમારે. પ્રગટે ભાગ્ય હમારે, ભયે મનોરથ મનકે ચીતે, શ્રીરૂક્મિણીલાલ નિહારીયે. કહી ન જાય અંગો અંગકી શોભા. ઉમંગી રસની ધારે; શ્રીગોકુલપતિકી યા છબી ઉપર વ્રજદાસ અપનપો વારે ૨

પદ ૨ જું

અંગો અંગ આનંદ ફુલી; શ્રીરૂક્મણી, નિરખનકી શ્રીવલ્લભ વલ્લભ મુખ, ગયો સકલ દુઃખ ભુલી. ૧ એસો હોટા ભયો ન દેખ્યો, કહુદેવ સમતુલઃ શ્રીવૃન્દાવનકો ચંદ પ્રકટ ભયો, ભક્તન જીવન મૂલી. ૨

પદ ૩ જું

પ્રાકટય અતુલ પ્રકટ ભયો સુનાંદ, જહાં તહાંતેં સુંદરી ઉઠ ધાઇ; બધાઇ બધાઇ બધાઇ કહતહે, મોદ ભરી મંદિરમેં આઇ. ૧ ધનિ રુકમણી તેરી કુખ સુહાગીન, ભાગ્યન યહ નિધિ ભૂતલ આઇ; અષ્ટસિદ્ધિ નવનિધિ અલૌકિક, યા દેખત હમ પાઇ વધાઇ. ૨ મગન ભઇ નિજ અંગ ન સમારતી. વારત તનમન પ્રાન સમેતી; અનેક મનોરથ કીયે ભાવતે, ન્યોછાવર કરી સંપત્તિ દેતી. ૩ ચિરંજીયો જુગ જુગ યહ બાલક, યા ઘરકી સુખ સંપતિ બાઢો; દર્શન દાનકી ભિક્ષા માગત દાસ ગોપાલ દ્વાર રહ્યો ઠાડો. ૩

ઘોળ ૪ થું

શ્રીગોકુલનાથ પ્રકટ થયારે, આયો મહાઓચ્છવ; મહારા તનના તાપ ગયારે. ૧ સખીઓ સર્વ મળી ઘેર આવોરે, મોતીના ચોક પુરાવોરે. આયો. ૨ કંકુના હાથા દેવરાવોરે, મંગલ કલશ ભરાવારે. આયો. ૩ કદલી ખંભ રોપાવોરે, તરીયા તોરણ બંધાવોરે. આયો. ૪ રૂડા મંડપ રચાવોરે, ચીરના ચંદરવા બંધાવારે. આયો. ૫ શેરિયે કાચ ઢળાવોરે, સુગંધ અગર ઉખેવોરે. આયો. ૬ મોટા સમીયાના બંધાવારે, મોતીની ઝાલરો ટંકાવોરે. આયો. ૭

प्रथम तो अन्याश्रय न करनो. अन्याश्रय महा बाधक है
ओर आश्रयतो एक श्रीनाथजीकोही करनो. सो आश्र
सिद्ध भयेतें, सर्व कार्य होत हैं, ओर यहलोकमें स
ठिकाने सुख पावत हैं. सो यह जानिकें आश्रयतो एक
श्रीजीकोही करनो. सो आश्रयको हेत यह है जो अपने
प्रभु विना ओर काहुको न माने. ओर दुसरेसों मूलके
मनोरथ न करे, ओर अन्य अवतारको अपेक्षा न
राखें, जीव तथा देह काहुकी अपेक्षा न राखे, तातें
यह बाततो बहुत कठिन है. सो काहे तें, जो यह संसार
तो वृक्ष रूपहें. ओर या संसाररूपी वृक्षमें दोय फलहें
दोय फल कोन कोनसे. एक तो सुख, एक दुःख. सो
दोय फल यामें लगत है. ओर संसाररूपी वृक्षकी शाखा
तो अनेक है. तिनकी शाखा सो मनके तरंग है, ओर
वृक्ष है ताको मूल जड है, सो बुद्धि है, ओर फल है,
सो अपने गिरनेसों डरपतहे. सो या मोह रूपी वियाग
के डरतें डार शाखा फल फुल टुटनतें डरत हें, ओर
अपने मुख्य तो वृक्षकी जड है सो दृढहे, तातें वृक्षको
डर नाहीं है. सो डार शाखा फळ पत्र अपने मूलको

द्रढ जानत नाही हे. तातें अत्यंत भय करिकें दुखित होतहें: तेसेइ यह जीव हें. [illegible] हें [illegible]
[illegible]को डरहे. ताको दुःख दूर करवेको अपने मूलको [illegible]. जो अपने मुल तो श्री [illegible] हें, तिनको जानत नहीं तातें अपने मुलको मुली गयो हें. ओर या [illegible]विद्या करिकें एसो विचार रहत नाहीं. जो हमारो मूल [illegible]वान हे. सो सर्वोपर द्रढ हे. हमको या मोहरुपी वियारकी चिंता नाहीं हे. इतनी बुध्धि दुष्ट स्वभाव करिके, जीवको रहत नाही हे, क्योंकि मोहरुपी वया-रके डरतें डरपत हें, ओर या संसारमें अनेक प्रकारके दुःख सुख पावत हें. तेसेइ या मनुष्यको या संसारमें अहंता ममतात्मक वृक्षरुपी हे, ओर डार याको कुटुंब हे, ओर शाखा याकी स्त्री पुत्र परिवार हें, पत्र मनके तथा देह संबंधी अनेक मनोरथके तरंग हें, ओर फल तो दोय सुख दुःख हे, ओर मूल याके भगवान हे. एसे अविद्या करिके मोहरुपी वयार लागे हे तब अपने मनमें अत्यंत भयभीत होत हें, ओर अपने मनमें कहे हे जो या वियारतें गिरुंगो, यह संसारके भय करिके अपने